यूको अंगिका

भागलपुर अंचल की गृह पत्रिका

वर्ष : 5, अंक : 01 :: अप्रैल - सितंबर 25

यूको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

UCO BANK
(A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का

Honours Your Trust

केंद्रीय कानून एवं न्याय मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल के कर कमलों से बैंक की गृह पत्रिका यूको अनुगूँज हेतु वर्ष 2024-25 का सर्वोच्च राजभाषा कीर्ति पुरस्कार - द्वितीय प्राप्त करते हुए कार्यपालक निदेशक श्री विजयकुमार निवृत्ति कांबले

बैंक के शीर्ष प्रबंधन से जी.डी.बिड़ला राजभाषा शील्ड योजना 2024-25 के लिए 'क' क्षेत्र के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए भागलपुर के अंचल प्रमुख श्री राजकुमार। साथ में अन्य अंचल प्रमुख भी पुरस्कार प्राप्त करते हुए।

यूको अंगिका

भागलपुर अंचल की गृह पत्रिका
वर्ष 5, अंक : 1
अप्रैल - सितंबर 25

संरक्षण

राजकुमार, अंचल प्रमुख

परामर्श एवं सहयोग

अमरजीत सिंह, उप अंचल प्रमुख

सचिन कुमार यादव, मुख्य प्रबंधक

अमन गर्ग, मुख्य प्रबंधक

शैलेश कुमार गुप्ता, मुख्य प्रबंधक

स्तुति कुमारी, मुख्य प्रबंधक

तकनीकी सहयोग

चिराग, सूचना प्रौद्योगिकी अधिकारी

संपादन

सुभाष चंद्र साह, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

संपादकीय पता

यूको बैंक
अंचल कार्यालय,भागलपुर
एस. के. तरफदार रोड , आदमपुर ,
भागलपुर (बिहार) – 812001
zobhagalpur.ol@uco.bank..in

विषय सूची

क्रमांक	विषय	पृष्ठ सं.
1	विषय - सूची	1
2	अंचल प्रमुख का संदेश	2
3	संपादकीय	3
4	एमएसएमई क्षेत्र: अर्थव्यवस्था की रीढ़	4-6
5	बैंकिंग प्रणाली में जमा पोर्टफोलियो की महत्ता	7-8
6	सतर्कता : बैंकिंग की नींव	9-10
7	बैंक की शाखाओं में नकदी प्रबंधन	11-12
8	कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव संसाधन	13-16
9	वैश्वीकरण में भारतीय भाषाओं की भूमिका	17-21
10	सामाजिक सुरक्षा योजनाएं	22 -24
11	डिजिटल बैंकिंग	25-27
12	करनाल से मसूरी की अविस्मरणीय यात्रा	28-29
13	कथा संसार : चाहत	30-31
14	बैंक में नौकरी का पहला दिन	32
15	जीवन उत्सव है	33-35
16	काव्यांजलि	36
17	मंजूषा चित्रकला	37
18	विविध गतिविधियां	38-39
19	पत्रं - पुष्पम्	40

इस पत्रिका में व्यक्त किए गए विचार रचनाकारों के अपने हैं। यूको बैंक या संपादक मंडल का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अंचल प्रमुख का संदेश

भागलपुर अंचल के सभी प्रिय यूकोजन,

भागलपुर अंचल की गृह पत्रिका "यूको अंगिका" के नवीनतम अंक के माध्यम से आप सभी से संवाद करते हुए मुझे हर्ष का अनुभव हो रहा है।

सितंबर 2025 छमाही के दौरान आप सभी की समर्पित भावना एवं कर्मठता से अंचल ने कई क्षेत्रों जैसे एमएसएमई ऋण, कृषि ऋण, चालू व बचत जमा राशि आदि के लिए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया है। अंचल ने बैंकाश्योरेंस एवं डिजिटल बैंकिंग विशेषत: एम बैंकिंग के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किया है। कासा जमा राशि, एमएसएमई व रिटेल डिजिटल ऋण व बैंकाश्योरेंस के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु हमारे अंचल को प्रधान कार्यालय द्वारा पुरस्कृत भी किया गया है। हमें ऐसे प्रदर्शन को जारी रखने एवं इसमें वृद्धि करने की जरूरत है। रिटेल ऋण क्षेत्र के अंतर्गत जहां कार ऋण में कुछ शाखाओं ने अच्छा कार्य किया है,वहीं गृह ऋण के अंतर्गत प्रदर्शन में उल्लेखनीय सुधार अपेक्षित है। हमें कासा जमा राशि संग्रहण पर विशेष फोकस करने की आवश्यकता है। अनर्जक आस्ति बनने पर रोक के साथ वसूली हमारी सदैव प्राथमिकता है। अभी भी कई शाखाएँ व्यवसाय के कई मानदंडों में मार्च-2025 की तुलना में ऋणात्मक हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह बिल्कुल स्वीकार्य नहीं है । सामाजिक सुरक्षा योजनाओं विशेषत: प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना एवं प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना के अंतर्गत प्रदर्शन को शीघ्रता से सुधारना आवश्यक है। अनुपालन के क्षेत्र में निरंतर सजग होकर कार्य को प्राथमिकता के आधार पर निपटाना है ताकि किसी भी अवांछनीय स्थिति से बचा जा सके। समग्रत: सभी शाखाएं अपने प्रदर्शन के संबंध में आत्म अवलोकन करें तथा अपनी वर्तमान स्थिति को तत्काल बेहतर करते हुए निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कदम उठाएं।

यह उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है कि बैंकिंग सेवा प्रदान करते समय एवं व्यवसाय संवर्धन के दौरान गुणवत्ता व निर्धारित नियमों व दिशा-निर्देशों का अनुपालन करना अपरिहार्य है।

हमारा बैंक भारत सरकार की राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन के प्रति प्रतिबद्ध है एवं यह व्यवसाय संवर्धन के लिए भी आवश्यक है। अत: इसे ध्यान में रखते हुए हम सभी बैंकिंग कार्य आम जनता की भाषा हिंदी में संपन्न करें एवं भारत सरकार की राजभाषा नीति का प्रभावी अनुपालन अवश्य सुनिश्चित करें। यह हर्ष का विषय है कि प्रधान कार्यालय द्वारा हमारे अंचल को वर्ष 2024-25 के दौरान राजभाषा में बेहतर कार्य करने के लिए 'क' क्षेत्र के अंतर्गत जी.डी. बिड़ला राजभाषा पुरस्कार - प्रथम प्रदान किया गया है। आप सभी को हार्दिक बधाई।

आइए ! हम सभी मिलकर कार्य करें एवं भागलपुर अंचल को शिखर पर प्रतिष्ठित करें।

शुभकामनाओं सहित,

(राजकुमार)

संपादकीय

प्रिय साथियो,

भागलपुर अंचल की गृह पत्रिका 'यूको अंगिका' का अप्रैल - सितंबर 25 अंक आप सभी को समर्पित करते हुए मुझे असीम आनंद की अनुभूति हो रही है। यह अंक भागलपुर की यूको टीम के समर्पण, प्रतिभा एवं प्रदर्शन का दर्पण है। इस अंक के लिए हमें विभिन्न स्टाफ सदस्यों से विविध विषयों पर आलेख एवं रचनाएं प्राप्त हुई हैं, जो उनकी सृजनात्मक प्रतिभा की अभिव्यक्ति हैं। विभिन्न विषयों पर प्रकाशित लेख ज्ञानोपयोगी एवं समसामयिक हैं। स्टाफ सदस्यों से प्राप्त सामग्रियों से इस अंक को सजाया गया है।

यह हम सभी के लिए गौरव एवं हर्ष का विषय है कि वर्ष 2024-25 के दौरान बैंक की हिंदी गृह पत्रिका 'यूको अनुगूँज' के लिए 'ग' क्षेत्र के अंतर्गत 14 सितंबर 2025 को गांधीनगर ,गुजरात में माननीय कार्यपालक निदेशक श्री विजयकुमार निवृत्ति कांबले जी ने सर्वोच्च राजभाषा कीर्ति पुरस्कार – द्वितीय ग्रहण किया। इसी समारोह में भागलपुर नराकास ,जिसका संयोजक यूको बैंक है, को प्रशंसनीय श्रेणी के अंतर्गत पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

राजभाषा हिंदी में काम करना हमारा दायित्व है।यह हमारा नैतिक कर्तव्य भी है। हमारे बैंक ने राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति प्रतिबद्धता चरितार्थ करने के लिए कई योजनाओं को लागू किया है। बैंक में हिंदी पत्राचार प्रोत्साहन लागू है ,जिसमें 'क' क्षेत्र के कार्मिक द्वारा एक वित्तीय वर्ष में 500 पत्र लिखने पर रु.5000/- की राशि प्रदान की जाती है। बैंक की हिंदी गृह पत्रिका 'यूको अनुगूँज' एवं भारत सरकार , राजभाषा विभाग की पत्रिका 'राजभाषा भारती' में प्रकाशित लेख के लिए मानदेय की व्यवस्था है। आइए ! हम सभी बैंक की योजनाओं का लाभ उठाएं एवं मिलकर हिंदी में कार्य करने का ऐसा सुंदर परिवेश बनाएं, जिसमें राजभाषा हिंदी की अविरल धारा सहजता से प्रवाहित हो सके ।

मैं पत्रिका प्रकाशन व इसे समृद्ध बनाने में योगदान देने वाले सभी स्टाफ सदस्यों,रचनाकारों,सहयोगियों तथा मनीषियों के प्रति हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। पत्रिका के सर्वविध स्तरोन्नयन के लिए सुधी पाठकों के मूल्यवान सुझावों एवं रचनात्मक प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी ।

अशेष शुभकामनाओं के साथ,

(सुभाष चंद्र साह)

सूक्ष्म, लघु ,मध्यम उद्यम(एमएसएमई) क्षेत्र :अर्थव्यवस्था की रीढ़

अमन गर्ग
मुख्य प्रबंधक
एसएमई व कृषि हब , भागलपुर

सूक्ष्म,लघु,मध्यम उद्यम(एमएसएमई) क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। हालिया अनुमानों के अनुसार इस क्षेत्र का जीडीपी में लगभग 30% व निर्यात में 45% से अधिक योगदान है। यह क्षेत्र 11 करोड़ से अधिक लोगों को रोजगार प्रदान करता है। इसमें सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम शामिल हैं, जो विनिर्माण, सेवाओं और नवाचार को बढ़ावा देते हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था विशेषत: ग्रामीण एवं अर्द्ध शहरी क्षेत्र के समग्र विकास में सूक्ष्म,लघु, मध्यम उद्यम(एमएसएमई) के महत्व को कवि रहीम की इन पंक्तियों के माध्यम से समझने का प्रयास करना चाहिए –

रहिमन देखि बड़ेन को लघु न दीजिए डारि।
जहां काम आवै सूई कहा करै तरवारि ।।

भारत में लाखों लोगों की आजीविका सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों पर निर्भर करती है। सरकार द्वारा इस क्षेत्र के विकास हेतु काफी महत्व दिया जा रहा है । इसके विकास के लिए भारत सरकार ने सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम विकास (एमएसएमईडी) अधिनियम, 2006 अधिनियमित किया है । इस अधिनियम के अनुसार विनिर्माण उद्यम के लिए संयंत्र एवं मशीनरी में निवेश के आधार पर तथा सेवाएं प्रदान करने वाले उद्यमों के लिए उपस्करों में निवेश के आधार पर सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों की परिभाषा दी गई है ।

बजट 2025 में संशोधित वर्गीकरण के तहत निवेश और टर्नओवर की सीमाएँ बढ़ाई गई हैं (जैसे, सूक्ष्म उद्यम के लिए ₹2.5 करोड़ तक निवेश और ₹10 करोड़ तक टर्नओवर) ताकि विकास को प्रोत्साहित किया जा सके।

भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में एमएसएमई क्षेत्र की लाखों ईकाइयों का योगदान है । वर्ष 2015-16 की अवधि के दौरान आयोजित राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण (एनएसएस) के 73वें दौर के अनुसार एमएमएमई क्षेत्र में लगभग 11 करोड़ अनुमानित रोजगार था। एमएसएमई क्षेत्र के भीतर तीन उप-क्षेत्रों में से प्रत्येक अर्थात्, व्यापार, विनिर्माण और अन्य सेवाओं में कुल रोजगार का लगभग एक तिहाई रोजगार है। कुल एमएसएमई का लगभग 50 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत है और कुल रोजगार का 45 प्रतिशत रोजगार प्रदान करता है ।

सरकार एमएसएमई को आत्मनिर्भर भारत का इंजन मानती है। सरकार का जोर निम्नलिखित पर है:

- ऋण उपलब्धता
- डिजिटलीकरण
- वैश्विक प्रतिस्पर्धा
- औपचारिककरण

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों को आर्थिक विकास के इंजन के रूप में स्वीकार किया गया है। ग्रामीण भारत में सूक्ष्म और लघु उद्योग सदियों से पारंपरिक कौशल के रूप में मौजूद हैं। हाल ही में, ग्रामीण उद्यमिता एक गतिशील अवधारणा के रूप में उभरी है ।

ग्रामीण एवं अर्द्ध शहरी क्षेत्रों का विकास मूल रूप से अनछुए प्राकृतिक और मानव संसाधनों के उचित उपयोग और क्षेत्र में मौजूद विशाल सामग्री के दोहन पर निर्भर है। ग्रामीण औद्योगीकरण की विशेषताएं पूंजी का कम निवेश, श्रम गहनता

और स्थानीय मानव व भौतिक संसाधनों का नियोजन तथा सरल प्रौद्योगिकी का उपयोग है। एमएसएमई इसमें अपनी भूमिका निभा रहा है। यह आत्मनिर्भर भारत के अंतर्गत स्थानीय के लिए मुखर हों (बी वोकल फॉर लोकल) को बढ़ावा देता है।

एमएसएमई क्षेत्र की चुनौतियां

एमएसएमई क्षेत्र अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देने के बावजूद कई चुनौतियों का सामना कर रहा है। प्रमुख चुनौतियों में भौतिक बुनियादी ढांचागत बाधाएं ,औपचारिक रूप न दे पाना, प्रौद्योगिकी अपनाने में सुस्ती, क्षमता निर्माण, आपूर्तिकर्ता और ग्राहक के बीच की कड़ी में कमी, ऋण और जोखिम पूँजी तक पहुंच की कमी, देरी से भुगतान की सार्वकालिक समस्या, प्रबंधकीय कौशल का अभाव, बहुराष्ट्रीय कंपनियों से प्रतिस्पर्धा, कम उत्पादन क्षमता, अप्रभावी विपणन रणनीति, आधुनिकीकरण और विस्तार पर कम जोर, नई ईकाइयों की स्थापना के लिए बोझिल प्रक्रियाएं और नियम, सस्ती कीमत पर कुशल श्रम की अनुपलब्धता, प्रशिक्षण और कौशल विकास कार्यक्रमों का अभाव आदि मुख्यत: शामिल हैं।

विकास के लिए किए जा रहे प्रयास

भारत सरकार ,भारतीय रिजर्व बैंक एवं वाणिज्यिक बैंकों द्वारा सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) के विकास के लिए प्रयास किए जा रहे हैं।सरकार द्वारा एमएसएमई क्षेत्र पर अत्यधिक बल दिए जाने, अनुसंधान और विकास में निवेश बढ़ाने, प्रौद्योगिकी विषयक उन्नयन तथा विकास को प्रेरित करने के फलस्वरूप इन अवसरों में बढ़ोतरी हुई है।

एमएसएमई के मामले में उद्यमियों को धन की समस्या का सामना करना पड़ता है। सरकारी और गैर-सरकारी संगठन एमएसएमई के वित्त पोषण और संसाधन निर्धारित करने का प्रयास करते हैं, परंतु ये संसाधन अक्सर लक्षित उद्यमियों तक नहीं पहुंचते हैं।जन-धन योजना के सफल कार्यान्वयन का इस्तेमाल लक्षित एमएसएमई तक सीधे मौद्रिक संसाधन पहुंचाने के लिए किया जा सकता है।

वाणिज्यिक बैंकों को एमएसएमई क्षेत्र को ऋण प्रदान करने का निर्देश दिया गया है। भारतीय रिजर्व बैंक की अद्यतन वार्षिक रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है कि वाणिज्यिक बैंकों की भारित औसत ऋण ब्याज दर कृषि, बड़े उद्योगों और बुनियादी ढांचे के लिए दिए जाने वाले ऋणों की तुलना में एमएसएमई के लिए दिए जाने वाले ऋणों पर अधिक है।

सूक्ष्म इकाइयों का आर्थिक एवं सामाजिक विकास करने हेतु व उन्हें वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए 8 अप्रैल 2015 को प्रधानमंत्री मुद्रा बैंक योजना की घोषणा की गई। इसका मुख्य उद्देश्य माइक्रो इकाइयों यथा कुटीर उद्योगों को वित्त की सहायता प्रदान करना है। यह मुद्रा योजना देश भर में सभी बैंक शाखाओं में उपलब्ध है।

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के माध्यम से प्रतिवर्ष 10 मिलियन से भी अधिक युवाओं को प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है ताकि उन्हें जीविकोपार्जन में मदद मिल सके। स्टार्ट-अप इंडिया तथा स्टैंड-अप इंडिया सहित स्व-रोजगार योजनाओं के माध्यम से भी युवाओं के लिए रोजगार के अवसर को बढ़ावा दिया जा रहा है।

भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा एमएसएमई क्षेत्र को उधार देने के लिए सभी अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों को समय समय पर अनुदेश जारी किए जाते हैं। सूक्ष्म और लघु क्षेत्र की इकाइयों को रु. 10 लाख तक के ऋण के लिए संपार्श्विक जमानत सुरक्षा अनिवार्य रूप से नहीं लेने के लिए बैंकों को निर्देश दिए गए हैं। इसमें सूक्ष्म और लघु उद्यमों के लिए क्रेडिट गारंटी फंड की ऋण गारंटी योजना (सीजीटीएमएसई) के अंतर्गत कवर ले सकते हैं। इस योजना का उपयोग बैंक सूक्ष्म और लघु उद्यम क्षेत्र की इकाइयों को दिए जाने वाले ऋणों की गुणवत्ता और ऋण की मात्रा में वृद्धि करने में कर सकते हैं।

इसके अलावा भी विभिन्न स्तरों पर एमएसएमई के विकास के लिए प्रयास किए जा रहे हैं ताकि वे देश के आर्थिक विकास, विशेषत: ग्रामीण एवं अर्द्ध शहरी क्षेत्र के समग्र उत्थान में अपना प्रभावी योगदान दे सके।

यूको बैंक का योगदान

यूको बैंक एमएसएमई क्षेत्र के संवर्धन के लिए लगातार प्रयासरत है। बैंक विभिन्न योजनाओं पीएमईजीपी ,पीएमएमवाई ,स्टैण्ड अप, इंडिया स्टार्ट अप इंडिया ,यूको उद्योग बंधु,यूको ट्रेडर,यूको व्यापार समृद्धि,आदि के माध्यम से विभिन्न उद्देश्यों यथा कार्यशील पूँजी, मशीनरी खरीद,बुनियादी ढाँचे के विस्तार आदि को ऋण प्रदान कर एमएसएमई क्षेत्र को सशक्त कर रहा

है। विगत कई वर्षों में यूको बैंक ने एमएसएमई कोर पोर्टफोलियो में उल्लेखनीय वृद्धि की है, जो सरकार की प्राथमिकताओं के अनुरूप मजबूत ऋण समर्थन को दर्शाता है।

अवधि	एमएसएमई पोर्टफोलियो (₹ करोड़)	वार्षिक वृद्धि (%)
मार्च 2023	18,934.61	9.6
मार्च 2024	23,697.41	25.2
मार्च 2025	30,026.73	26.7
सितम्बर 2025	34,125.75	13.6

भागलपुर अंचल का योगदान

एमएसएमई सेक्टर ने भागलपुर क्षेत्र में समावेशी आर्थिक विकास, रोजगार सृजन, रेशम उद्योग व कृषि-आधारित उद्योगों की वृद्धि में उल्लेखनीय योगदान दिया है। भागलपुर पारंपरिक रूप से रेशमी और कपास के वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध है। यहां का सिल्क — "भागलपुरी सिल्क" — गुणवत्ता एवं निर्यात के लिए जाना जाता है। एमएसएमई इकाइयाँ संचालित हैं, जो कृषि-क्षेत्र आधारित उत्पाद जैसे खाद्य प्रसंस्करण, मसाले, तेल, आदि में संलग्न हैं। यूको बैंक ने एमएसएमई सेक्टर को विभिन्न ऋण योजनाओं (पीएमईजीपी, मुद्रा, उद्योग बंधु ,ट्रेडर आदि) के माध्यम से आर्थिक सहायता उपलब्ध कराकर नवोन्मेषशील उद्योगों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ग्रामीण व शहरी एमएसएमई को वित्तीय समावेशन के द्वारा यह क्षेत्र रोजगार, निर्यात और आय में सुधार की दिशा में अग्रसर है।

इस क्षेत्र में यूको बैंक भागलपुर अंचल का योगदान भी महत्वपूर्ण रहा है, जो बैंक के कुल एमएसएमई पोर्टफोलियो में उल्लेखनीय हिस्सेदारी दिखाता है। एमएसएमई सेक्टर ने भागलपुर क्षेत्र में समावेशी आर्थिक विकास, रोजगार सृजन, रेशम उद्योग व कृषि-आधारित उद्योगों की वृद्धि में उल्लेखनीय योगदान दिया है। यूको बैंक ने एमएसएमई सेक्टर को विभिन्न ऋण योजनाओं (पीएमईजीपी, मुद्रा, उद्योग बंधु ,ट्रेडर आदि) के माध्यम से आर्थिक सहायता उपलब्ध कराकर नवोन्मेषशील उद्योगों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ग्रामीण व शहरी एमएसएमई को वित्तीय समावेशन के द्वारा यह क्षेत्र रोजगार, निर्यात और आय में सुधार की दिशा में अग्रसर है।भागलपुर अंचल का प्रदर्शन निम्नवत् है -

अवधि	एमएसएमई पोर्टफोलियो (₹ करोड़)	वार्षिक वृद्धि (%)
मार्च 2023	292.75	15.1
मार्च 2024	365.97	25.0
मार्च 2025	471.89	29.0
सितम्बर 2025	535.13	13.3

यद्यपि यह प्रदर्शन मजबूत स्थिति को दर्शाता है,तथापि इसमें काफी सुधार की संभावनाएं हैं।

सुझाव

एमएसएमई क्षेत्र को गति देने के लिए व्यापक स्तर पर प्रयास किए जाने की ज़रूरत है, ताकि ऋण उपलब्धता के साथ-साथ कम लागत वाले और पर्यावरण के अनुकूल नवाचार डिजाइन और विचारों को विकसित किया जा सके। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए उच्च स्तर पर समन्वय, संचार और सहयोग की ज़रूरत है। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों में अच्छे कॉर्पोरेट गवनेंस को विकसित करना होगा । उद्यमियों को प्रशिक्षण देने की जरूरत है। आवश्यकता इस बात की भी है कि यह आर्थिक विकास योजनाओं के सफल कार्यान्वयन, कौशल उन्नयन हेतु ऐसी पहचान बनाए ताकि रोजगार सृजन एवं देश के सामाजिक-आर्थिक विकास का एक प्रभावी साधन बन सके।

उपसंहार

एमएसएमई भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। इस क्षेत्र ने राष्ट्र के विकास विशेषत: ग्रामीण एवं अर्द्ध शहरी क्षेत्र के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। रोजगार के बड़े अवसर पैदा किए हैं। गरीबी को कम करने में प्रभावी भूमिका का निर्वहन किया है। गांव और शहर के बीच बढ़ती असमानताओं एवं क्षेत्रीय असंतुलन को कम करने के संदर्भ में इसका योगदान

——————-शेषांश पृष्ठ सं. 21 पर — - - - ——————

बैंकिंग में जमा पोर्टफोलियो की महत्ता

स्तुति कुमारी
मुख्य प्रबंधक
अंचल कार्यालय,भागलुर

जमा पोर्टफोलियो बैंकिंग प्रणाली की आधारशिला है। यह बैंक की नींव है, जो तरलता, स्थिरता और लाभप्रदता सुनिश्चित करता है, जिससे बैंक ग्राहकों को कर्ज दे पाते हैं और जोखिम प्रबंधन में मदद मिलती है। अधिक जमा राशि को प्रोत्साहित करना एवं ऋण वितरण को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करना महत्त्वपूर्ण कदम हैं।

जमा पोर्टफोलियो का महत्व

ऋण प्रदान करने का स्त्रोत : बैंक का मुख्य अर्थ जनता से धन प्राप्त करना एवं जरूरतमंद लोगों को ऋण प्रदान करना है।
तरलता का स्रोत: बैंक के लिए जमा सबसे महत्वपूर्ण और सस्ता निधि स्त्रोत है, जो उन्हें ऋण देने और दैनिक परिचालन के लिए नकदी प्रदान करते हैं।
जोखिम प्रबंधन: यह ऋण-जमा अनुपात को संतुलित करता है, जिससे बैंक बाजार के उतार-चढ़ाव में भी स्थिर रहते हैं।
ग्राहक संबंध: यह बैंक और ग्राहकों के बीच एक मजबूत संबंध बनाता है, जिससे ग्राहक बैंक से जुड़े रहते हैं।
लाभप्रदता: जमाकर्ताओं को कम ब्याज देकर और अधिक ब्याज पर ऋण देकर बैंक शुद्ध ब्याज मार्जिन अर्जित करते हैं।
वित्तीय स्थिरता: एक मजबूत जमा आधार बैंक को आर्थिक संकट के दौरान भी वित्तीय रूप से मजबूत बनाए रखता है।

जमा नकदी का संकट तब उत्पन्न होता है, जब बैंकों के पास अपने ग्राहकों को उधार देने के लिये पर्याप्त धनराशि नहीं होती है। परिणामस्वरूप, व्यवसायों के सुचारु संचालन में बाधाएँ उत्पन्न होती हैं, और कर्मचारियों को वेतन प्राप्त करने में देरी होती है। यह आर्थिक स्थिरता और वित्तीय व्यवस्था को बाधित कर सकता है।

बेहतरीन बाज़ार प्रदर्शन एवं बढ़ती वित्तीय जागरूकता के कारण निवेशक तेज़ी से उच्च-रिटर्न, इक्विटी-लिंक्ड उत्पादों की ओर अधिक उन्मुख हो रहे हैं, जिससे बैंकों के समक्ष जमा प्राप्त करने और ऋण वृद्धि के समर्थन की दोहरी चुनौती उत्पन्न होती है।

एकत्र की गई जमा राशि के एक हिस्से को नियामक आवश्यकताओं जैसे- नकद आरक्षित अनुपात तथा वैधानिक तरलता अनुपात ऋण देने योग्य धन को कम करने एवं जमा के लिए प्रतिस्पर्द्धा को बढ़ाने के लिये अलग रखा गया है।

बैंक के जमा पोर्टफोलियो में कासा अत्यधिक महत्वपूर्ण है। कासा अर्थात् चालू – बचत जमा राशि बैंक की आशा है। यह कम लागत वाली जमाराशि है,जो बैंक की लाभप्रदत्ता को सकारात्मक रूप में प्रभावित करती है। कासा का उच्च प्रतिशत बैंक व्यवसाय की दृष्टि से लाभप्रद है।

हर बैंक जमा पोर्टफोलियो को बढ़ाने के लिए नई – नई रणनीतियों के साथ कार्य कर रहे हैं। हमारा यूको बैंक भी जमा पोर्टफोलियो में संवृद्धि के लिए प्रयत्नशील है। इसी क्रम में बैंक में 2023 में संसाधन (रिसोर्स) वर्टिकल की स्थापना की गई। अंचल कार्यालय स्तर पर संसाधन टीम का गठन किया गया,जिनका कार्य गुणवत्ता युक्त जमाराशि में संवृद्धि करना है।

बैंकिंग में जमा पोर्टफोलियो को बढ़ाने के लिए प्रतिस्पर्धी ब्याज दरें, बेहतर ग्राहक सेवा, डिजिटल सुविधाएँ, और नए उत्पाद को बढ़ावा देने पर ध्यान देना चाहिए।

यूको बैंक भी अपने ग्राहकों को विविध जमा उत्पादों की पेशकश करता है।

बैंक के पास जमा के विविध क्षेत्रों में कई महत्वपूर्ण योजनाएं हैं। हर योजनाओ के अंतर्गत खोले गए खातों की अलग अलग विशेषताएं एवं लाभ हैं।कुछ योजनाएं सामान्य हैं एवं कुछ विशिष्ट अर्थात् कई योजनाएं लक्षित समूहों को ध्यान में रखकर तैयार की गई है। अपक्षित मानदंडों को पूराकर खाते खोले जा सकते हैं एवं उसके अंतर्गत निहित सुविधाओं का लाभ उठाया जा सकता है, ग्राहकों को विशिष्ट एवं आकर्षक सुविधाएं प्रदान की गई हैं।जमा उत्पादों में खंडवार कुछ प्रमुख योजनाएं निम्नलिखित हैं –

बचत जमा योजनाएं

यूको सुविधा वेतन खाता, यूको यूनिक बचत खाता,यूको रॉयल बचत खाता ,यूको प्रिविलेज बचत खाता,यूको शौर्य एवं शूरवीर खाता , यूको एनआरई एवं एनआरओ खाता।

चालू जमा खाता योजनाएं

यूको बिजनेस, यूको बिजनेस प्लस ,यूको केयर ,यूको केयर प्लस ,यूको साथी

महिलाओं के समर्पित जमा योजनाएं (पिंक बास्केट)

यूको अपराजिता पर्ल, यूको अपराजिता इमराल्ड,यूको अपराजिता सैफायर,यूको अपराजिता डायमंड,यूको जया लक्ष्मी,यूको संचयिका

सावधि योजनाएं

यूको 333,यूको 444 ,यूको ग्रीन डिपॉडिट आदि सावधि योजनाएं हैं,जिस पर आकर्षक ब्याज दिया जाता है। वरिष्ठ नागरिकों को अतिरिक्त ब्याज के लाभ का प्रावधान है।

इसके अलावा यूको पवित्रा सॉल्यूशन ,यूको शुल्क संग्रहण मॉड्यूल ,यूको रेरा चालू खाता आदि योजनाएं हैं।

बैंक अपने संसाधन के विस्तार में जुटा है। हमें बेहतर ग्राहक सेवा , प्रतिस्पर्धी ब्याज दर ,डिजिटल एवं नवाचार उत्पाद , डिजिटल ऑनबोर्डिंग , विभिन्न संस्थाओं व संगठनों के साथ साझेदारी एवं जागरूकता आदि के माध्यम से जमा राशि बढ़ाने एवं जमा पोर्टफोलियो की संवद्धि में योगदान देना चाहिए।

बैंकों की सुरक्षा एवं वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करना सर्वोपरि उद्देश्य बन गया है।

****

रचना आमंत्रण

सभी स्टाफ सदस्यों से अनुरोध है कि पत्रिका के लिए बैंकिंग,सूचना प्रौद्योगिकी,अर्थव्यवस्था,भाषा एवं संस्कृति,व्यक्तित्व विकास, तनाव प्रबंधन,समय प्रबंधन व अन्य विषयों पर उपयोगी व मौलिक आलेख तथा साहित्य की विविध विधाओं के अंतर्गत संस्मरण,लघु कथा,कविता आदि प्रेषित करें। रचनाकार अपनी रचना कागज के एक ओर स्पष्ट अक्षरों में लिखकर / यूनिकोड में टंकित कर मौलिकता प्रमाण पत्र (जिसमें यह स्पष्ट उल्लेख हो कि रचना मौलिक है, प्रकाशनार्थ आदि के लिए अन्यत्र नहीं भेजा गया है, के साथ भेजें । हमें शाखाओं की विशिष्ट गतिविधियों की सचित्र रिपोर्टों की भी प्रतीक्षा है। पत्रिका को और अधिक स्तरीय बनाने के लिए आपके रचनात्मक सुझाव तथा सकारात्मक प्रतिक्रिया विशेषत: आमंत्रित हैं।

****

****

सतर्कता : बैंकिंग की नींव

रवि रंजन
अधिकारी
जगदीशपुर शाखा

आधुनिक युग में बैंकिंग प्रणाली का अर्थव्यवस्था में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय अर्थव्यवस्था की धुरी कहे जाने वाले भारतीय बैंक राष्ट्र के निर्माण में अपना अमूल्य योगदान देते आ रहे हैं। बैंकिंग पर ग्राहकों, निवेशकों एवं हितधारकों का भरोसा ही सबसे बड़ी पूँजी है एवं इस भरोसे को सदा बनाए रखने के लिए सतर्कता अत्यधिक जरूरी है। सतर्कता का अर्थ है – सावधानी, ईमानदारी,पारदर्शिता, जोखिम प्रबंधन एवं सबसे बढ़कर धोखाधड़ी रोकने की क्षमता। जिस बैंक की सतर्कता व्यवस्था मजबूत होती है, वह उतना ही सुरक्षित रहता है।

बैंकिंग व्यवस्था की एक ज्वलंत समस्या है - धोखाधड़ी ,जो सतर्कता के अभाव की परिणति है। बैंक एवं उनके खाताधारकों के साथ धोखाधड़ी के कारण बैंक को प्रतिवर्ष बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। इसका मुख्य कारण है - सर्तकता की कमी एवं बैंक के दिशा निर्देशों की अनदेखी करना । बैंको में धोखाधड़ी कई प्रकार से की जाती है। जैसे, फर्जी दस्तावेजों के आधार पर एवं तकनीकी खामियों का फायदा उठाकर या अन्य तरीके से । परंतु यदि बैंक एवं उनके ग्राहक सर्तक रहें तो बैंकों में धोखाधड़ी को रोका जा सकता है या उससे होने वाले नुकसान को कम किया जा सकता है। बैंकों में धोखाधड़ी का पता चलते ही हमें त्वरित कार्रवाई करनी चाहिए न कि उसे छुपाने की कोशिश करनी चाहिए।

बैंकों में धोखाधड़ी के प्रमुख कारण

1. केवाईसी (अपने ग्राहक को जानिए) मापदंडों में चूक
2. साइबर क्राइम,जिसके अंतर्गत हैकर द्वारा फर्जी ई मेल,फोन कॉल्स आदि के माध्यम से गुप्त जानकारी प्राप्त करना, कार्ड आदि के क्लोनिंग एवं अन्य माध्यमों से धोखाध़डी की घटना को अंजाम देना ।
3. तकनीकी रुप से कम कमजोर आईटी उत्पादों का प्रयोग
4. जाली दस्तावेजों का प्रयोग
5. जोखिम प्रबंधन एवं निगरानी में कमी
6. डिजिटल अरेस्ट
7. जागरूकता व सावधानी का अभाव

बैंकों में धोखाधड़ी के अत्यन्त ही नकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं ,जिनमें से प्रमुख हैं :

1. इससे बैंकों की लाभप्रदत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है तथा यह बैंकों की वित्तीय हालत को खोखला बना देती है ।
2. विश्वास का संकट पैदा होता है। इससे ग्राहकों व आमजनों का बैंकिंग प्रणाली से भरोसा टूटता है। फलत: बैकों की प्रगति प्रभावित होती है।
3. इससे ग्राहकों की शिकायतें बढ़ती हैं एवं ग्राहकों में असंतोष उत्पन्न होता है ।
4. देश की अर्थव्यवस्था चरमरा जाती है ।

बैंकों में धोखाधड़ी से बचने के आवश्यक उपाय

- केवाईसी मापदण्डों का सतर्कता से पालन करना
- सावधानी एवं सतर्कता
- सुरक्षित तकनीकी उपकरणों का प्रयोग
- गोपनीय आंकड़ों यथा एटीएम पिन, ओटीपी नं., पासवर्ड आदि किसी के साथ साझा नहीं करना तथा इसे समय - समय पर बदलते रहना
- प्रशिक्षण व जागरुकता के माध्यम से सुरक्षात्मक पहलूओं की जानकारी सभी तक पहुँचाना
- लेखा परीक्षा तंत्र को मजबूत बनाना

- कर्मचारियों के दायित्व का निर्धारण
- एक बार धोखाधड़ी की पहचान हो जाने पर धोखाधड़ी की जांच पूरी करना
- धोखाधड़ी संबंधी मामलों की सूचना प्रबंधन को दिए जाने की प्रक्रिया को मजबूत करना

धोखाधड़ी की रोकथाम सभी की जिम्मेवारी है, अत: ऐसी संस्कृति का सृजन होना चाहिए, जहां हम सब अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों को जानें एवं किसी भी प्रकार की धोखाधड़ी की रोकथाम में अपना सम्पूर्ण योगदान दें।

धोखाधड़ी की बढ़ती घटनाओं से बैंकों के सामने बहुत बड़ी चुनौती आकार ले रही है,जिसका समय रहते निवारण नहीं किया गया तो निश्चय ही बैंकों के अस्तित्व पर ही सवालिया निशान लग जाएगा। तमाम बैंकिंग प्रणाली, नियंत्रक रिजर्व बैंक की निगरानी एवं इसके बावजूद भी यह सब हो जाए तो यकीनन व्यवस्थाओं की बड़ी चूक है जिसने भारत के पूरे बैंकिंग सिस्टम की साख और तौर-तरीकों पर बड़ा सवाल खड़ा कर दिया है।

यदि तकनीक का इस्तेमाल अच्छे कार्यों में किया जाए तो यह विकास में योगदान देती है, किन्तु समाज के कुछ असामाजिक तत्व इस तकनीक का दुरुपयोग कर समाज को हानि पहुंचाते हैं।वहीं दूसरी ओर कुछ तकनीकी खामियों की वजह से भी लोग कपट के शिकार हो जाते हैं। सभी बैंक इस संबंध मे कड़े कदम उठा रहे हैं एवं रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के प्रयास इस संबंध में सराहनीय हैं। सबको पता है कि वित्तीय लेन-देन की कार्यप्रणाली विश्वास एवं भरोसे की होती है, भरोसा न टूटे, इसके लिए हर स्तर पर कार्य करने की जरूरत है। निश्चित रूप से ये घटनाएँ आमजनों के बीच बैंक की साख और उससे भी ज्यादा उभरती अर्थव्यवस्था पर करारा प्रहार है। भविष्य में यह न हो,इसके लिए बेहद कड़े और उससे भी ज्यादा प्रभावी प्रबंधन शीघ्र ही नितांत आवश्यक है।

उपर्युक्त समस्त प्रकार की धोखाधड़ी के मामले अपराध की श्रेणी में आते हैं। यदि बैंक कर्मचारी / अधिकारी नियमानुसार अपना कार्य विहित प्रक्रिया का पालन करते हुए सजगता के साथ करते हैं तो धोखाधड़ी व कपट को कम किया जा सकता है। इससे बैंक की छवि भी खराब नहीं होगी। साथ ही ग्राहकों को भी अपनी चेक बुक को सभांल कर रखना जरूरी है। कभी भी पहले से चेक हस्ताक्षर करके नहीं रखना चाहिए। ग्राहकों को डिजिटली भुगतान करते समय सर्तक रहना चाहिए। यदि कोई धोखाधड़ी ग्राहक के साथ होती है तो इसकी सूचना तुरंत अपनी शाखा में देनी चाहिए तथा शाखा की सलाह पर धोखाधड़ी की शिकायत नजदीक के पुलिस स्टेशन में की जानी चाहिए ताकि त्वरित कार्यवाही कर अपराधियों को दबोचा जा सके। बैंकों को बचत एवं चालू खाते खोलते समय सतर्क रहना चाहिए एवं बैंक के नियमों का कड़ाई से पालन करना चाहिए। कोई भी ऋण प्रस्ताव आने पर दस्तावेजों की जांच के साथ - साथ भौतिक निरीक्षण एवं आसपास के लोगों से प्रस्तावित ऋणी के बारे में जानकारी जुटाई जानी चाहिए ताकि बैंक द्वारा दिया जाने वाला ऋण सुरक्षित रहे एवं किसी भी प्रकार की धोखाधड़ी होने से पूर्व ही उसे रोक दिया जाए।

इस प्रकार उपर्युक्त निवारक सतर्कता के उपायों एवं समाधान का उपयोग करते हुए हम अपने बैंक की छवि को धूमिल होने से बचा सकते हैं। सतर्क रहकर ही हम धोखेबाजों से सुरक्षित रह सकते हैं और उनकी मंशा पर पानी फेर सकते हैं। इस धोखे का शिकार बनकर, उसकी भरपाई करने से बेहतर है कि वह धोखा ही न खाएं क्योंकि कहा गया है कि -

प्रक्षालनाद्धि पंकस्य दूराद् स्पर्शनं वरम्

अर्थात् कीचड़ से सने होने के बाद धोने की अपेक्षा,कीचड़ में न पड़ना ही श्रेयस्कर है।

प्रशिक्षण एवं जागरूकता के माध्यम से सतर्कता बढ़ाकर धोखाधड़ी पर नियंत्रण किया जा सकता है। सतर्कता व्यवस्था ही ग्राहकों के विश्वास को कायम रखती है एवं बैंक को स्थिर रखती है।कहने की आवश्यकता नहीं है कि सतर्कता ही मजबूत बैंकिंग की आधारशिला है। सतर्क बैंक ,सुरक्षित ग्राहक यही प्रगतिशील भारत की पहचान है।

यह भी अनिवार्य होगा कि हम तत्पर पहचान, धोखाधड़ी का पता लगाने, उसके शमन एवं नियंत्रण तंत्र को मजबूत करते हुए स्वयं को अनैतिक कार्यकलापों से अलग रखें। यह केवल बैंकों की सुरक्षा के लिए ही नहीं,अपितु समग्र वित्तीय प्रणाली की स्थिरता तथा उस पर भरोसे को भी बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

बैंक की शाखाओं में नकदी प्रबंधन : बिहार के परिप्रेक्ष्य में

अमर सेन कुमार
प्रबंधक (सुरक्षा)
अंचल कार्यालय,भागलपुर

बैंकिंग प्रणाली किसी भी देश एवं राज्य की आर्थिक गतिविधियों का आधार होती है। बिहार जैसे बड़े और जनसंख्या -प्रधान राज्य में बैंकिंग प्रणाली की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यहाँ कृषि, व्यापार, सरकारी योजनाओं और सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों के कारण नकदी की मांग अधिक रहती है। परंतु हाल के वर्षों में बिहार की बैंक शाखाओं में नकदी प्रबंधन एक गंभीर चुनौती बन गई है।

बिहार में बैंकों के नकदी प्रबंधन (कैश मैनेजमेंट) में सुधार की आवश्यकता है, ताकि शाखाएं कम से कम समस्याओं का सामना कर सकें। नकदी प्रबंधन एक महत्वपूर्ण कार्य है, जिसमें बैंक की शाखाओं में नकदी की मांग और आपूर्ति को संतुलित करना शामिल है।

बिहार में नकदी प्रबंधन की वर्तमान स्थिति में कई चुनौतियाँ हैं। शाखाओं में नकदी की कमी या अधिकता एक आम समस्या है,जिससे ग्राहकों को परेशानी होती है और बैंक की प्रतिष्ठा पर भी असर पड़ता है। नकदी प्रबंधन की प्रमुख चुनौतियां निम्नलिखित हैं –

नकदी अधिशेष या कमी की स्थिति

बैंक की किसी शाखा में नकदी की अधिकता रहती है तो किसी में कमी। मांग का सही अनुमान न लगा पाने से एक शाखा में बहुत अधिक नकदी जमा हो जाती है (जिस पर ब्याज नहीं मिलता) और दूसरी ओर कमी हो जाती है, जिससे असुविधा होती है। यह सबसे बड़ी समस्या है।

मैन्युअल और पुराना सिस्टम

परम्परागत तरीके से गिनती और रिकॉर्ड रखने से अधिक समय लगता है, त्रुटियां अधिक होती हैं और नकदी की वास्तविक स्थिति का पता नहीं चलती।

सुरक्षागत चुनौती

नकदी परिवहन के दौरान सुरक्षा एक बड़ी समस्या है। ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था न होने के कारण नकदी ले जाने में जोखिम बढ़ जाता है। कई बार सुरक्षा कारणों से नकदी की आपूर्ति सीमित कर दी जाती है। नकली नोट, गबन या अन्य आंतरिक-बाहरी धोखाधड़ी का खतरा हमेशा बना रहता है। इसके अलावा नकदी विप्रेषण, सुरक्षा गार्ड और तिजोरियों पर बैंक का काफी खर्च होता है।

डिजिटल भुगतान का सीमित उपयोग

बिहार में इंटरनेट कनेक्टिविटी और डिजिटल साक्षरता की कमी के कारण लोग डिजिटल भुगतान से बचते हैं। इससे नकदी पर निर्भरता बनी रहती है और बैंक शाखाओं पर दबाव बढ़ता है।

एटीएम में नकदी की कमी

एटीएम में नकदी भरने की प्रक्रिया समय पर न होने से ग्राहकों को परेशानी होती है। कई बार एटीएम लंबे समय तक खाली रहते हैं, जिससे शाखाओं में भीड़ बढ़ जाती है।

नकदी प्रबंधन की चुनौतियां के कारण

बिहार में नकदी प्रबंधन की चुनौतियों के मुख्य कारण निम्न हैं -

ग्रामीण अर्थव्यवस्था का नकदी-प्रधान स्वरूप

बिहार कृषि आधारित अर्थव्यवस्था वाला राज्य है। यहां नकदी लेन-देन अधिक होता है। पर्याप्त डिजिटल लेन – देन नहीं होने के कारण नकदी की मांग को बढ़ावा मिलता है।

तकनीकी अवसंरचना की कमी

बिहार में डिजिटल लेन-देन के लिए अपेक्षित इंटरनेट और मोबाइल नेटवर्क की कमजोर स्थिति डिजिटल बैंकिंग को सीमित करती है।

सुरक्षा जोखिम

नकदी परिवहन के दौरान डकैती और चोरी की घटनाएँ नकदी प्रबंधन को कठिन बनाती हैं।

उपर्युक्त चुनौतियों के समाधान हेतु कुछ महत्वपूर्ण सुझावों पर विचार किया जा सकता है -

1. शाखाओं को नकदी की आवश्यकताओं का अनुमान लगाने के लिए एक प्रभावी प्रणाली विकसित करनी चाहिए । इससे उन्हें अपनी नकदी की आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद मिलेगी ।

2. शाखाओं को अपने कैश को नियमित रूप से रिअरेंज करना चाहिए, ताकि नकदी की कमी या अधिकता न हो ।

3. अधिक ए.टी.एम. स्थापित करने से ग्राहकों को नकदी प्राप्त करने में आसानी होगी और शाखाओं पर दबाव कम होगा ।

4. कैश डिपॉजिट मशीन स्थापित करने से ग्राहक अपनी नकदी जमा कर सकेंगे और शाखाओं के नकदी लेन – देन पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा ।

5. एक प्रभावी नकदी प्रबंधन सॉफ्टवेयर का उपयोग करके शाखाएं अपने कैश को बेहतर ढंग से प्रबंधित कर सकती हैं।

6. शाखा कर्मचारियों को नकदी प्रबंधन के बारे में प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, ताकि वे अपनी जिम्मेदारियों को बेहतर ढंग से निभा सकें ।

7. शाखाओं की नियमित लेखा परीक्षा की जानी चाहिए ताकि नकदी प्रबंधन में किसी भी प्रकार की अनियमितता का पता लगाया जा सके।

8. नकदी वाहन (बैंक / भाड़े का वाहन) का नकदी प्रबंधन में महत्वपूर्ण योगदान है। नकदी वाहन की सम्यक् आवाजाही नकदी की आपूर्ति, सुर, और ग्राहकों को समय पर सेवा प्रदान करने में मदद करती है । नकदी परिवहन के लिए आधुनिक तकनीक और सुरक्षित वाहन का उपयोग किया जाए। कैश वैन में जीपीएस और सुरक्षा गार्ड की व्यवस्था अनिवार्य हो।

9. एक प्रभावी कैश मैनेजमेंट व ऑटोमेटेड कैश हैंडलिंग सिस्टम का उपयोग करके शाखाएं अपने कैश को बेहतर ढंग से प्रबंधित कर सकती हैं ।

10. डिजिटल लेन- देन को बढ़ावा देकर व एटीएम में नियमित रूप से पर्याप्त नकदी की उपलब्धता सुनिश्चित कर नकदी प्रबंधन को बेहतर बनाया जा सकता है।

नकदी प्रबंधन में सुधार के लिए मानव संसाधन विकास

1. शाखा कर्मचारियों को नकदी प्रबंधन के बारे में प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, ताकि वे अपनी जिम्मेदारियों को बेहतर ढंग से निभा सकें।

2.एक प्रभावी नकदी प्रबंधन टीम का गठन किया जाना चाहिए, जो शाखाओं के कैश मैनेजमेंट की निगरानी करे ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि बिहार में बैंकों की शाखाओं में नकदी प्रबंधन की समस्या बहुआयामी है। इस नकदी प्रबंधन में सुधार के लिए कई कदम उठाए जा सकते हैं । शाखाओं को अपने कैश की मांग का अनुमान लगाने, कैश रिअरेंजमेंट करने, ए.टी.एम. स्थापित करने, कैश डिपॉजिट मशीन स्थापित करने, कैश मैनेजमेंट सॉफ्टवेयर का उपयोग करने, प्रशिक्षण और विकास प्रदान करने, तथा नियमित ऑडिट करने से अपने कैश मैनेजमेंट में सुधार कर सकती हैं। इससे शाखाएं कम से कम समस्याओं का सामना करेंगी और ग्राहकों को बेहतर सेवाएं प्रदान कर सकेंगी।

इन समाधानों से बैंक नकदी प्रबंधन को अधिक कुशल, सुरक्षित

——— शेषांश पृष्ठ संख्या 16 पर ———

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव संसाधन: सहयोग या प्रतिस्पर्धा?

सम्राट सिंह
प्रबंधक
एसएमई एवं कृषि हब

परिचय

आज का युग तकनीकी परिवर्तन का युग है, जहाँ मशीनें न केवल कार्यों को सरल बना रही हैं, बल्कि मानव मस्तिष्क की तरह सोचने, विश्लेषण करने और निर्णय लेने की क्षमता भी हासिल कर रही हैं। इस परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जो उद्योगों, व्यवसायों और कार्यस्थलों को अभूतपूर्व गति से बदल रही है। दूसरी ओर, मानव संसाधन विभाग, जो किसी भी संगठन की नींव है, कर्मचारियों की भर्ती, प्रशिक्षण, प्रेरणा और संगठनात्मक संस्कृति को मजबूत करने का दायित्व निभाता है। यह निबंध इस प्रश्न पर गहराई से विचार करता है कि क्या कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव संसाधन एक-दूसरे के सहयोगी बनकर कार्यस्थल को और सशक्त करेंगे, या फिर एक-दूसरे के प्रतिस्पर्धी बनकर मानवीय हस्तक्षेप को कम कर देंगे? इस लेख में हम दोनों के बीच सहयोग की संभावनाओं, प्रतिस्पर्धा की चुनौतियों, भारत के परिदृश्य और भविष्य की दिशा पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता: एक परिवर्तनकारी शक्ति

कृत्रिम बुद्धिमत्ता वह तकनीक है जो मशीनों को मानव जैसी बुद्धिमत्ता प्रदान करती है। यह आँकड़ा विश्लेषण, पैटर्न पहचान और स्वचालित निर्णय लेने की क्षमता के साथ कार्यस्थलों को नया आयाम दे रही है। कार्यस्थल पर इसका प्रभाव निम्नलिखित स्तरों पर देखा जा सकता है:

1. स्वचालित प्रक्रियाएँ : कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने भर्ती, कर्मचारी मूल्यांकन और आँकड़ा प्रबंधन जैसे कार्यों को तेज और कुशल बनाया है। उदाहरण के लिए, कुछ तकनीकी उपकरण कर्मचारियों के प्रदर्शन का गहन विश्लेषण कर सकते हैं।

2. वैयक्तिक अनुभव: कृत्रिम बुद्धिमत्ता कर्मचारियों की ज़रूरतों के अनुसार प्रशिक्षण और विकास कार्यक्रमों को अनुकूलित करती है।

3. निरंतर उपलब्धता: कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित संवाद-बॉट्स कर्मचारियों के सामान्य प्रश्नों का तुरंत जवाब दे सकते हैं।

4. उत्पादकता में वृद्धि: यह तकनीक कार्यों को तेजी से पूरा करने में मदद करती है, जिससे समय और संसाधनों की बचत होती है।

हालाँकि, कृत्रिम बुद्धिमत्ता की यह शक्ति मानव संसाधन के लिए एक दोधारी तलवार भी है। जहाँ यह कार्यक्षमता को बढ़ाती है, वहीं यह पारंपरिक मानव संसाधन भूमिकाओं को चुनौती भी देती है।

मानव संसाधन: संगठन की आत्मा

मानव संसाधन विभाग किसी संगठन का वह हिस्सा है जो केवल प्रशासनिक कार्यों तक सीमित नहीं है। यह कर्मचारियों के बीच सहानुभूति, विश्वास और संगठनात्मक संस्कृति का निर्माण करता है। इसके प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं:

कर्मचारी प्रेरणा: मानव संसाधन कर्मचारियों को प्रेरित करने और उनकी कार्य संतुष्टि बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

संस्कृति निर्माण: यह संगठन के मूल्यों और नैतिकता को मजबूत करता है, जो दीर्घकालिक सफलता के लिए आवश्यक है।

विवाद समाधान: मानव संसाधन कर्मचारियों के बीच उत्पन्न होने वाले विवादों को मानवीय संवेदनशीलता के साथ हल करता है।
रणनीतिक योजना: यह संगठन के दीर्घकालिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कर्मचारी विकास और भर्ती रणनीतियाँ बनाता है।

मानव संसाधन की सबसे बड़ी ताकत उसकी भावनात्मक बुद्धिमत्ता है, जो मशीनें अभी तक पूरी तरह हासिल नहीं कर पाई हैं। यह विभाग न केवल कर्मचारियों की कार्यक्षमता को बढ़ाता है, बल्कि उनके मानवीय मूल्यों को भी संरक्षित करता है।

सहयोग की संभावनाएँ

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव संसाधन के बीच सहयोग से कार्यस्थल में क्रांतिकारी बदलाव संभव है । निम्नलिखित क्षेत्रों में यह सहयोग विशेष रूप से प्रभावी हो सकता है:

1. भर्ती प्रक्रिया में सुधार

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित प्रणालियाँ सैकड़ों आवेदन-पत्रों का विश्लेषण कर उपयुक्त उम्मीदवारों को चुन सकती हैं। यह प्रक्रिया न केवल तेज होती है, बल्कि मानवीय पक्षपात को भी कम करती है। उदाहरण के लिए, कुछ वैश्विक कंपनियों ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग कर भर्ती समय को 75% तक कम किया है।

2. प्रशिक्षण और विकास

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित शिक्षण मंच कर्मचारियों की व्यक्तिगत ज़रूरतों के अनुसार प्रशिक्षण सामग्री प्रदान करते हैं। ये मंच कर्मचारियों की प्रगति को ट्रैक कर उनके लिए अनुकूलित पाठ्यक्रम सुझाते हैं। मानव संसाधन इन उपकरणों का उपयोग कर कर्मचारियों की दक्षता बढ़ा सकता है।

3. आँकड़ा-संचालित निर्णय

कृत्रिम बुद्धिमत्ता कर्मचारी संतुष्टि, उत्पादकता और कार्यस्थल छोड़ने की दर जैसे मापदंडों का विश्लेषण कर मानव संसाधन को बेहतर रणनीति बनाने में मदद करती है। इससे संगठन दीर्घकालिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम होता है।

4. संवाद-बॉट्स की भूमिका

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित संवाद-बॉट्स कर्मचारियों के सामान्य प्रश्नों, जैसे अवकाश नीति, वेतन संबंधी जानकारी या कार्यस्थल नियमों के बारे में तुरंत जवाब दे सकते हैं। इससे मानव संसाधन कर्मी अधिक रणनीतिक कार्यों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

5. कर्मचारी अनुभव में सुधार

कृत्रिम बुद्धिमत्ता कर्मचारियों के व्यवहार और प्राथमिकताओं का विश्लेषण कर वैयक्तिक अनुभव प्रदान करती है, जैसे कल्याण कार्यक्रम या लचीले कार्य समय की सिफारिश। यह कर्मचारी संतुष्टि और जुड़ाव को बढ़ाता है।

प्रतिस्पर्धा की चुनौतियाँ

हालाँकि सहयोग की संभावनाएँ आकर्षक हैं, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव संसाधन के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थिति भी उभर रही है। कुछ प्रमुख चुनौतियाँ निम्नलिखित हैं:

1. रोजगार पर खतरा

स्वचालित प्रक्रियाओं के बढ़ते उपयोग से कई मानव संसाधन कार्य, जैसे आँकड़ा प्रविष्टि और प्रारंभिक चयन, स्वचालित हो रहे हैं। एक अध्ययन के अनुसार, 2030 तक 30% तक मानव संसाधन कार्य स्वचालित हो सकते हैं। इससे रोजगार की सुरक्षा पर सवाल उठ रहे हैं।

2. भावनात्मक बुद्धिमत्ता की कमी

कृत्रिम बुद्धिमत्ता में भावनात्मक संवेदनशीलता और सहानुभूति की कमी है। उदाहरण के लिए, कर्मचारी विवादों को सुलझाने या उनकी व्यक्तिगत समस्याओं को समझने में यह तकनीक अभी तक मानव संसाधन की जगह नहीं ले सकती।

3. नैतिकता और गोपनीयता की चिंताएँ

कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा आँकड़ा संग्रह और विश्लेषण से कर्मचारियों की गोपनीयता पर खतरा मंडरा सकता है। यदि यह तकनीक पक्षपातपूर्ण आँकड़ों पर आधारित निर्णय लेती है, तो यह अनुचित भर्ती या मूल्यांकन का कारण बन सकती है।

4. अति-निर्भरता का जोखिम

यदि मानव संसाधन या कार्मिक कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर पूर्णत" निर्भर करता है तो उनकी अपनी सोच, विचार ,चिंतन तथा

रचनात्मकता व निर्णय लेने की क्षमता कम हो सकती है। यह संगठन की दीर्घकालिक रणनीति पर नकारात्मक प्रभाव भी डाल सकता है।

5. सांस्कृतिक असंगति

भारत जैसे देशों में, जहाँ कार्यस्थल की संस्कृति में भावनात्मक और सामाजिक मूल्य महत्वपूर्ण हैं, कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अंधाधुंध उपयोग सांस्कृतिक असंगति पैदा कर सकता है।

भारत में परिदृश्य

भारत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है, विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी, विनिर्माण और वित्तीय क्षेत्रों में। हालाँकि, कुछ विशिष्ट पहलू भारत के संदर्भ में महत्वपूर्ण हैं:

1. तकनीकी दक्षता की कमी: एक हालिया रिपोर्ट के अनुसार, 2025 तक भारतीय कंपनियाँ उन उम्मीदवारों को प्राथमिकता देंगी जिनके पास कृत्रिम बुद्धिमत्ता और आँकड़ा विश्लेषण जैसी तकनीकी दक्षताएँ होंगी। लेकिन कुशल कर्मियों की कमी एक बड़ी चुनौती बनी हुई है।

2. कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग: भारतीय कंपनियाँ जैसे टाटा परामर्श सेवाएँ (टीसीएस), इन्फोसिस और विप्रो पहले से ही भर्ती और कर्मचारी प्रबंधन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग कर रही हैं। उदाहरण के लिए, टाटा परामर्श सेवाएँ ने अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित मॉड्यूल लागू किए हैं।

3. सांस्कृतिक संवेदनशीलता: भारत में कार्यस्थल की संस्कृति में विविधता और भावनात्मक जुड़ाव महत्वपूर्ण हैं। मानव संसाधन को यह सुनिश्चित करना होगा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग भारतीय कार्य संस्कृति के अनुरूप हो।

4. शिक्षा और प्रशिक्षण की आवश्यकता: मानव संसाधन कर्मियों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता और आँकड़ा विश्लेषण में प्रशिक्षित करना होगा ताकि वे तकनीक के साथ तालमेल बना सकें।

5. नौकरी सृजन की संभावना: कुछ अध्ययनों के अनुसार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता भारत में नई नौकरियाँ भी सृजित कर सकती है, जैसे तकनीकी प्रशिक्षक और आँकड़ा विश्लेषक की भूमिकाएँ।

भविष्य की दिशा और समाधान

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव संसाधन का भविष्य एक संकर मॉडल (हाइब्रिड मॉडल) पर निर्भर करता है, जहाँ दोनों की ताकत का उपयोग एक-दूसरे को पूरक बनाने के लिए किया जाए। निम्नलिखित समाधान इस दिशा में मदद कर सकते हैं:

1. पुनः कौशल विकास और उन्नत प्रशिक्षण

मानव संसाधन कर्मियों को आँकड़ा विश्लेषण, मशीन शिक्षण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता उपकरणों का उपयोग सिखाने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए जाने चाहिए। उदाहरण के लिए, कंपनियाँ ऑनलाइन शिक्षण मंचों के साथ साझेदारी कर सकती हैं।

2. नैतिक दिशानिर्देश

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग के लिए स्पष्ट नीतियाँ बनानी होंगी जो कर्मचारी गोपनीयता और नैतिकता की रक्षा करें। भारत में डेटा संरक्षण कानून लागू करना इस दिशा में महत्वपूर्ण होगा।

3. सहयोग पर जोर

मानव संसाधन को कृत्रिम बुद्धिमत्ता को प्रतिस्थापन के बजाय सहयोगी के रूप में देखना चाहिए। उदाहरण के लिए, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आँकड़ा विश्लेषण करे और मानव संसाधन उस विश्लेषण के आधार पर रणनीतिक निर्णय ले।

4.शिक्षा और प्रशिक्षण की आवश्यकता

मानव संसाधन कर्मियों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता और आँकड़ा विश्लेषण में प्रशिक्षित करना होगा ताकि वे तकनीक के साथ तालमेल बना सकें।

5.नौकरी सृजन की संभावना

कुछ अध्ययनों के अनुसार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता भारत में नई नौकरियाँ भी सृजित कर सकती है, जैसे तकनीकी प्रशिक्षक और आँकड़ा विश्लेषक की भूमिकाएँ।

6. विविधता और समावेशिता

कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रणालियों को इस तरह डिज़ाइन करना होगा कि वे पक्षपात से मुक्त हों और भारत जैसे विविध देश की सांस्कृतिक और सामाजिक ज़रूरतों का सम्मान करें।

केस स्टडी: वैश्विक और भारतीय परिप्रेक्ष्य

1. वैश्विक उदाहरण: एक वैश्विक कंपनी ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित भर्ती उपकरण लागू किए, जिससे भर्ती प्रक्रिया में 75% समय की बचत हुई और उम्मीदवारों की विविधता में सुधार हुआ।

2. भारतीय उदाहरण: इन्फोसिस ने अपने निया मंच के माध्यम से कर्मचारी प्रशिक्षण और आँकड़ा विश्लेषण में कृत्रिम बुद्धिमत्ता को एकीकृत किया है, जिससे कर्मचारी उत्पादकता में 20% की वृद्धि हुई।

निष्कर्ष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव संसाधन के बीच का रिश्ता न तो पूरी तरह सहयोगात्मक है और न ही पूरी तरह प्रतिस्पर्धात्मक। यह एक ऐसी साझेदारी है जो समझदारी, संतुलन और निरंतर सीखने की मांग करती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता कार्यस्थल को कुशल और आँकड़ा-संचालित बनाती है, लेकिन मानव संसाधन ही वह शक्ति है जो संगठन को मानवीय संवेदनशीलता और संस्कृति से जोड़े रखती है। भविष्य में वही संगठन सफल होंगे जो तकनीक की गति और मानवता की गर्माहट के बीच संतुलन बना पाएँगे। भारत जैसे विविध और गतिशील देश में, जहाँ सांस्कृतिक और भावनात्मक मूल्य गहरे हैं, मानव संसाधन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का यह सहयोग न केवल संभव है, बल्कि एक उज्ज्वल कार्यस्थल के निर्माण की कुंजी भी हो सकता है।

जिस कार्य में भावनात्मक बुद्धिमत्ता, रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और जटिल समस्या-समाधान की आवश्यकता होती है, वे स्वाभाविक रूप से मानवीय होती हैं और एआई के लिए उन्हें दोहराना मुश्किल होता है। स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और कला जैसे उद्योग इन गुणों पर बहुत अधिक निर्भर करते हैं और इसलिए स्वचालन के प्रति कम संवेदनशील होते हैं। यहाँ मानव संसाधन बेहतर साबित हो सकता है।

समाज को यह तय करना है कि तकनीक का उपयोग कैसे और किस रूप में किया जाए ताकि इससे अधिकतम लाभ कैसे प्राप्त किया जाए तथा इसकी सीमाएं क्या होंगीं ?

बिल गेट्स के अनुसार "कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमारा मित्र हो सकता है"।

निष्कर्ष यह है कि जहाँ एआई कुछ क्षेत्रों में उत्कृष्ट है, वहीं मानव संसाधन की अनुभूति अन्य क्षेत्रों में बेजोड़ है, जिससे बुद्धिमत्ता के ये दो रूप प्रतिस्पर्धी होने के बजाय पूरक बनाने के लिए प्रयास किए जाने चाहिए।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता या मानव संसाधन की श्रेष्ठता एवं प्रतिस्पर्धा पर चिंतन करने के बदले इस पर जोर दिया जाए कि , एआई और मानवीय संसाधन एक साथ कैसे काम कर सकते हैं। मानवीय रचनात्मकता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के साथ-साथ एआई की शक्ति का लाभ उठाकर, हम अधिक जटिल समस्याओं का समाधान कर सकते हैं और संभावनाओं की सीमाओं को आगे बढ़ा सकते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता अपनी अपरिमित शक्ति का उपयोग कर मानवीय क्षमताओं को बढ़ाए और मनुष्य अपनी भावनात्मक गहराई और रचनात्मक सोच से एआई का मार्गदर्शन करे, इसी सहयोगात्मक एवं समन्वयात्मक चिंतन में सभी का कल्याण निहित है।

****

——— पृष्ठ सं. 12 का शेषांश ———

और लागत प्रभावी बना सकते हैं। इसका समाधान केवल नकदी आपूर्ति बढ़ाने से नहीं होगा, बल्कि इसके लिए डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देना, लॉजिस्टिक्स और सुरक्षा को मजबूत करना तथा तकनीकी अवसंरचना का विकास करना आवश्यक है। यदि इन उपायों को प्रभावी ढंग से लागू किया जाए, तो नकदी प्रबंधन की समस्या काफी हद तक कम हो सकती है और बैंकिंग प्रणाली अधिक सुदृढ़ और आधुनिक बन सकती है।

राजभाषा नियम ,1976 के नियम 5 के अनुसार हिंदी में प्राप्त पत्रादि का उत्तर हिंदी में देना अनिवार्य है।

वैश्वीकरण में भारतीय भाषाओं की बढ़ती भूमिका

राकेश रंजन
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय, भागलपुर

वैश्वीकरण एक बहुआयामी अवधारणा है। यह संपूर्ण विश्व को एक ग्राम में तब्दील करने का विचार है। इसमें कोई बंधन नहीं ,कोई सीमा नहीं। न कोई सरहद और न कोई दीवार। इसमें बाजार व विपणन के लिए ''विश्व गांव'' की परिकल्पना समाहित है।यह विश्वव्यापी पारस्परिक जुड़ाव है जो विचार, पूंजी, वस्तु और लोगों के प्रवाह से उत्पन्न होता है।

भौतिकतावाद,उपभोक्तावाद एवं बाजारवाद इस अवधारणा के मूल उत्स हैं। वैश्वीकरण के फलस्वरूप आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक -सांस्कृतिक रूप से रहन-सहन, वेश- भूषा,भाषा इत्यादि पर प्रभाव पड़ रहा है। वैश्वीकरण को गतिशीलता प्रदान करने में प्रौद्योगिकी एवं सूचना क्रांति की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।वैश्वीकरण, प्रौद्योगिकी एवं सूचना क्रांति की गति से आज जीवन का कण – कण स्पंदित है। वैश्वीकरण ने विश्व के हर भाग एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। वैश्वीकरण के फलस्वरुप आर्थिक तत्व मुख्य रुप से केंद्र में आ गया।वित्त एवं वाणिज्य की प्रतिष्ठा तथा लोकप्रियता में वृद्धि हुई। वैश्वीकरण के इस युग में भारत की विविधतापूर्ण संस्कृति एवं भाषाओं ने कई रूपों में प्रभाव छोड़ा है एवं प्रभावित भी हुआ है। वैसे देखा जाए तो भारतीय संस्कृति तो सदियों से वसुधैव कुटुंबकम् का उद्घोष कर रही है। वैश्वीकरण तो उसका लघु एवं एकांगी पक्ष है। भारत सांस्कृतिक एवं भाषाई विविधताओं की विरासत वाला समृद्ध देश है। यहां हिंदी के अलावा कई भाषाएं बोली जाती हैं। संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भारतीय भाषाएं शामिल हैं।

वैश्वीकरण के युग में हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं की भूमिका बढ़ी है। वैश्वीकरण के कारण विचार,पूंजी,वस्तु और लोगों का आदान प्रदान बढ़ता है। इस प्रक्रिया में इन भाषाओं पर व्यापक प्रभाव पड़ा है।

वैश्वीकरण के फलस्वरूप हिंदी एवंअन्य भारतीय भाषाओं की बढ़ती भूमिका का अध्ययन निम्नलिखित रूप में किया जा सकता है -

वैश्वीकरण में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया, मध्यम वर्ग, बाजार, संचार माध्यम, बहुराष्ट्रीय कंपनियां,आप्रवासन और संपन्नता,प्रौद्योगिकी उन्नयन, उपभोक्तवाद आदि प्रमुख तत्वों की प्राथमिकता रहती है।

वैश्वीकरण का बाजारवाद हिंदी एवं भारतीय भाषाओं की भूमिका बढ़ा दी है। भारत तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था वाले देश के रुप में उभर कर सामने आया है। भारत विश्व का एक विस्तृत बाजार बना। यहां की विशाल जनसंख्या विश्व के अन्य देशों में उत्पादित मालों के लिए उपभोक्ता बनी। इस दृष्टि से भारत आकर्षण का केंद्र बना। उपभोक्ताओं तक पहुँचने के लिए उनकी भाषा का आश्रय लेना पड़ा, जो भारत में स्वभावत: हिंदी एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाएं हैं।

अत: विश्व उत्पादों का बाजार बनने पर यहाँ की प्रमुख भाषा हिंदी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं पर व्यापक प्रभाव पड़ा। उत्पादकों को यह भान हो गया कि उन्हें अपने उत्पादों के विपणन के लिए भारत की बहुसंख्यक जनता द्वारा बोली एवं समझी जाने वाली तथा अधिकांश भागों में फैली हुई हिंदी तथा अन्य भाषाओं के शरणागत होना ही होगा।यह हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं की बढ़ती हुई शक्ति का उद्घोष है।

यही कारण है कि आज बहुराष्ट्रीय कंपनियां बड़े पैमाने पर अपने उत्पादों के विज्ञापन न केवल हिंदी में तैयार करा रही हैं,अपितु उसमें क्षेत्रीय लहजा अपनाने पर भी बल दे रही हैं। कंपनियां हिंदी के माध्यम से करोड़ों- करोड़ों उपभोक्ताओं को आकर्षित करने में लगी हैं। अगर किसी उत्पाद को अखिल भारतीय स्वीकृति दिलानी हो तो हिंदी अपनाना ही होगा। हिंदी न केवल साहित्य संसार की भाषा रही, अपितु विपणन एव विज्ञापन दुनिया की भी समर्थ भाषा बन गई। बाजार ने हिंदी को एक नया आयाम दिया। अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति बुश ने अपनी गरज से ही सही,किंतु अपने देशवासियों से हिंदी सीखने की अपील की थी।

भारतीय भाषाओं के बढ़ते वैश्विक परिदृश्य के पीछे एक बड़ा कारण विस्तृत भारतीय बाजार है। भारत विश्व की दूसरी सबसे बड़ी आबादी वाला देश है। ऐसे में यहाँ बड़ा बाजार होना जाहिर सी बात है। इतने बड़े बाजार में अपने-अपने उत्पाद पहुँचाने की होड़; यहाँ के सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश को ग्रहण करने को अनिवार्य मानती हैं। जिसके पीछे बाजार की मांग के अनुरूप ही बाजार की भाषा के होने का कारक कार्य करता है। ये कंपनियां अपने इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु अपने लाभ के लिए सही यहाँ की भाषा को अपना रही हैं। फलतः अनायास ही हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का वैश्विक भाषा के रूप में विकास हो रहा है।वस्तुतः पिछले कुछ दशकों में वैश्विक पटल पर भारतीय भाषाओं ने विशेषकर हिंदी, पंजाबी, बंगाली, भोजपुरी इत्यादि ने अपनी वैश्विक उपस्थिति दर्ज कराई हैं।

आंकड़े दर्शाते हैं कि सवा सौ करोड़ की आबादी वाले इस राष्ट्र में चालीस करोड़ से अधिक लोगों की मातृभाषा हिंदी है। पैंतीस करोड़ से अधिक लोग इस भाषा का प्रयोग दूसरी भाषा के रूप में करते हैं। लगभग तीस करोड़ लोग ऐसे हैं जिनका किसी न किसी रूप में हिंदी भाषा के साथ सरोकार जुड़ा हुआ है। कहने का आशय यह है कि देश की आबादी के लगभग तीन चौथाई से अधिक लोगों में हिंदी संपर्क का माध्यम है। बाजारवाद और हिंदी वैश्वीकरण का अर्थ व्यापक तौर पर बाजारीकरण है। आज मानव जीवन का प्रत्येक क्षेत्र बाजारवाद से प्रभावित है। मुक्त व्यापार और वैश्वीकरण के युग में भारत में हिंदी भाषा संप्रेषण का एक बड़ा बाजार है। एक अनुमान के अनुसार आज बहुराष्ट्रीय और देशी कंपनियों की लगभग सत्तर प्रतिशत से अधिक वस्तुएं हिंदी के माध्यम से जनमानस तक पहुंचा रही हैं। वैश्वीकरण में आर्थिक और सांस्कृतिक दोनों दृष्टि से हिंदी की भूमिका बढ़ी है। बाजारीकरण की व्यवस्था में हिंदी भाषा इसका माध्यम बनकर उभरी है। इतना ही नहीं प्रिंट व इलैक्ट्रॉनिक मीडिया और हिंदी टेलिविजन पर प्रसारित कार्यक्रम चाहे किसी भी विषय से संबंधित हों उन्हें व्यावसायिकता की दृष्टि से हिंदी एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाएं एक बहुत बड़ा क्षेत्र उपलब्ध कराते हैं। टेलीविजन ने इस तरह हिंदी के भाषा वैविध्य और संप्रेषण क्षमता को सर्वथा नई दिशाएं प्रदान की हैं। वैश्वीकरण के इस समय में मीडिया एवं उसकी भाषा की प्रभावशाली भूमिका है।

आजकल साबुन और टूथपेस्ट जैसी दैनंदिन उपयोग की वस्तुओं से लेकर मोटर साईकिल, कार, फ्रिज, टीवी, वॉशिंग मशीन, ब्रांडेड कंपनियों के कपड़े आदि के विज्ञापन हिंदी एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में प्रसारित किए जा रहे हैं। आज प्रचार माध्यमों की भाषा हिंदी होने के कारण वे भारतीय परिवार और सामाजिक संरचना की उपेक्षा नहीं कर सकते। विज्ञापन के साथ - साथ धारावाहिकों तक में हिंदी अपनी जड़ों से जुड़ी हुई है। भारत में अब डिस्कवरी, सोनी, कलर, आज तक, एनडीटीवी, जी टीवी आदि अनेकानेक चैनल हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में अपने कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं। पौराणिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक, पारिवारिक, जासूसी, वैज्ञानिक और हास्य प्रधान अनेक प्रकार के धारावाहिकों का प्रदर्शन विभिन्न चैनलों पर जिस हिंदी एवं अन्य भाषाओं में किया जा रहा है उसमें विषय संदर्भित व्याहारिक भाषा रूपों और कोडों का मिश्रण किया जाता है जिसे सहज ही जनस्वीकृति मिल रही है। अनेक न्यूज़ चैनल क्षेत्रीय भाषाओं में ग्राउंड रिपोर्टिंग कर रहे हैं। यानी संप्रेषण की असल खुशबू मातृभाषा से आती है। जुड़ाव, लगाव और अपनापन का भाव अपनी ही भाषा में महसूस होता है।

हिंदी एवं अन्य भाषाओं के प्रसार में भारतीय फिल्मों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। फिल्म के माध्यम से भी हिंदी को वैश्विक स्तर पर सम्मान प्राप्त हो रहा है। आज अनेक फिल्मकार भारत ही नहीं यूरोप, अमेरिका और खाड़ी देशों के अपने दर्शकों को ध्यान में रखकर फिल्में बना रहे हैं और हिंदी सिनेमा ऑस्कर तक पहंच रहा है। सिनेमा ने हिंदी की लोकप्रियता और व्यावहारिकता दोनों ही बढ़ाई है। ऑस्कर से सम्मानित फिल्म अवतार हिंदी का ही शब्द है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चित फिल्म 'स्लमडॉग मिलिनेयर' का 'जय हो' गाना हिंदी का परचम लहरा रहा है। सिनेमा में क्षेत्रीय भाषाओं का डंका खूब बज रहा है।

संचार माध्यमों में भारतीय भाषाएं का बोलबाला है। यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है। संचार माध्यम समाज का दर्पण है। संचार माध्यमों का ताना और बाना अधिक जटिल और व्यापक है क्योंकि वे तुरंत और दूरगामी असर करते हैं। वैश्वीकरण ने उन्हें अनेक चैनल उपलब्ध कराए हैं संचार माध्यमों की भाषा में भारतीय भाषाओं का प्रयोग बढ़ा है, भले ही उसमें नए शब्दों, वाक्यों, अभिव्यक्तियों और वाक्य संयोजन की विधियों का समावेश हुआ हो । संचार माध्यम की भाषा के रूप में प्रयुक्त होने पर हिंदी समस्त ज्ञान विज्ञान और आधुनिक विषयों से सहज ही जुड़ गई है। संचार माध्यमों के कारण हिंदी भाषा का तेजी से सरलीकरण होने से वैश्विक स्तर पर भी उसे स्वीकृति प्राप्त हो रही है।

हिंदी भाषा ने बाजार और तकनीक दोनों की भाषा के रूप में अपना सामर्थ्य सिद्ध कर दिया है। आज कंप्यूटर, मोबाइल, फेसबुक, ट्वीटर, ब्लॉग, व्टाट्सएप्प इत्यादि पर हिंदी के प्रयोग ने दुनिया को सचमुच मनुष्य की मुट्ठी में कर दिया है। वह दिन दूर नहीं जब हर जगह हिंदी भाषा का बोलबाला नजर आएगा । आजकल मुद्रित और इलेक्ट्रॉनिक दोनों ही प्रकार के जनसंचार माध्यम नए विकास के आयामों को छू रहे हैं। हिंदी भाषी भी बाधाओं को पार करते हुए नित नवीन ऊंचाइयां छू रहे हैं वैश्वीकरण के इस युग में भारतीय संस्कृति का विश्व भर प्रसार हो रहा है। भारतीय संस्कृति को समझने की जिज्ञासा बढ़ी है। सूचना, समाचार और संवाद प्रेषण के लिए हिंदी को विकल्प के रूप में अपनाकर समृद्ध किया है। वैश्वीकरण के कारण जहां पूरा विश्व एक गांव में तब्दील हो चुका है। वैश्विक बाजार संस्कृति के लिए हिंदी सबसे अनुकूल भाषा के रूप में अपनाई जा रही है। इससे जहां एक ओर हिंदी का विकास व विस्तार हो रहा है, वहीं दूसरी ओर संपूर्ण राष्ट्र में भाषिक संपन्नता का परिचय पाकर हिंदी की स्वीकृति का भी क्षेत्र विस्तृत होता जा रहा है। हिंदी भाषा विक्रेता और क्रेता के बीच सेतु का कार्य कर रही है। भारत की सदियों पुरानी उक्ति वसुधैव कुटुम्बकम् एक बार फिर से चरितार्थ होती जा रही है।

भारत प्राचीनकाल से ही अपनी सामाजिक एवं सांस्कृतिक विशिष्टताओं के लिए विश्व में जाना जाता रहा है। इक्कीसवीं सदी में भारतीयों ने वैश्विक मंच पर अपनी पहुँच से भारत की इसी प्राचीन पहचान को समृद्ध किया है।आज विश्व मे सर्वत्र भारत, भारतीयता एवं भारतीय संस्कृति की बढ़ती पहुँच भारत की वैश्विक स्वीकार्यता का द्योतक है। विश्व में भारतीयता की इन्हीं बढ़ती अनुगूंजों को भारतीय भाषाओं ने स्वर प्रदान किया है। भारतीय संस्कृति के इस विस्तार में अन्य कारकों के साथ-साथ भारतीय भाषाओं का भी विस्तार हुआ है।

भाषा एवं संस्कृति का विशिष्ट एवं घनिष्ठ संबंध है। इसीलिए जहाँ-जहाँ संस्कृति पुष्पित एवं पल्लवित होती है, वहाँ-वहाँ स्वतः ही भाषा का भी विकास होता चला जाता है। आज के वैश्विक युग में जब भारतीय समाज एवं संस्कृति ने अपनी वैश्विक पहचान निर्मित की है तो स्वतः ही भारतीय भाषाओं का भी वैश्वीकरण हो गया है।

संस्कृत विश्व की सबसे प्राचीन और कई भाषाओं की जननी मानी जाती है। विश्व की अधिकांश भाषाओं के शब्दों की उत्पत्ति भारतीय शब्द परंपरा से ही जुड़ी हुई है। भारतीय भाषाओं की विश्व की अन्य भाषाओं के साथ यह समानता भारतीय भाषाओं के वैश्विक स्वरूप की ओर इंगित करती है, जिसे संस्कृत भाषा के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं की विश्व यात्रा के अनुक्रम में समझा जा सकता हैं। जब किसी व्यक्ति अथवा समाज का किसी एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवासन होता है तो वह अकेला नहीं होता है,अपितु उसके साथ-साथ उसकी भाषा,संस्कार एवं मान्यताएं भी विस्थापित होती हैं। इस तरह उसकी समूची दुनिया ही विस्थापित हो जाती हैं। यह विस्थापन मनुष्य के साथ-साथ उसकी भाषा, समाज एवं संस्कृति का भी होता है ।

मनुष्य अपने मूल से उखड़कर जहाँ-जहाँ जाकर बसता रहा, वहाँ -वहाँ उसकी भाषा, संस्कार और रीति-रिवाज भी जीवित होते चले गए। इस तरह मनुष्य की यह विस्थापन यात्रा भाषा एवं संस्कृतियों के अनवरत क्रम की विकास यात्रा भी कही जा सकती है। इस विस्थापन एवं प्रवासन का भी भारतीय भाषाओं को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण स्थान है।

आजादी के पहले एवं बाद में भारत के लोग कई कारणों से विस्थापित हुए हैं। वे प्रवासन की प्रकिया के हिस्सा रहे हैं। भारत में स्वतंत्रता के पश्चात् से शिक्षा,रोजगार एवं अन्य कारणों से विश्व के विकसित देशों ब्रिटेन,कनाडा,अमेरिका इत्यादि में बहुत तेजी से प्रवास हुआ है। बीसवीं सदी के अंतिम दशकों में सूचना क्रांति के विस्फोट ने प्रवास की इस गति को और अधिक विस्तार दिया है। प्रवासन लगातार बढ़ता जा रहा है।

जिसके कारण विश्व के अधिकांश देशों में भारतीय तकनीकी पेशेवरों, चिकित्सकों इत्यादि के रूप में भारतीयों की एक बहुत बड़ी जनसंख्या विदेशों में जाकर बस गई। यही कारण है कि इसकी वैश्विक गूँज भी सर्वत्र सुनाई पड़ रही हैं।आज विश्व के अनेक देशों में भारतवंशी जिसमें सभी राज्यों, भाषाओं, जातियों, धर्म एवं संप्रदायों के लोग जुड़े हुए हैं, भारतीय संस्कृति एवं भाषा का प्रसार बढ़ा रहे हैं। उदाहरणार्थ पंजाब के लोगों का पंजाबी डायस्पोरा, बंगालियों का बंगाली डायस्पोरा,बिहारी और पूर्वी उत्तर प्रदेश से जुड़े लोगों का भोजपुरी, महाराष्ट्र के लोगों का मराठी तथा दक्षिण भारत के लोगों का तमिल, तेलगु डायस्पोरा आदि-आदि। यद्यपि इन सभी छोटे-छोटे डायस्पोराओं में अपने-अपने राज्यों और संस्कृति के अनुरूप आचरण एवं व्यवहार किया जाता है तथापि इन सभी के सामूहिक स्वरूप से बने भारतीय डायस्पोरा में हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति ही इनकी मूल पहचान बनकर उभरती है। यद्यपि विश्व के इन देशों में भारत के बहुभाषी लोग निवास कर रहे हैं तथापि उन सभी की सामूहिक पहचान हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति ही हैं।

एक अनुमान के मुताबिक लगभग 2 करोड़ प्रवासी भारतीय विश्व के अलग-अलग देशों में रह रहे हैं। भारतेतर देशों में रह रहे इन प्रवासियों के द्वारा अंग्रेजी उनके कामकाज की भाषा, हिंदी इनकी राष्ट्रीयता की भाषा एवं उनकी स्थानीय भाषा बोली उनके घर परिवार की भाषा के रूप में प्रयुक्त होती है। इस तरह देखा जाए तो वैश्विक मंच पर भारतीयों के साथ उनकी भाषा, समाज एवं संस्कृति भी अपनी विशिष्ट पहचान निर्मित कर रहे हैं। बाजार ने अपनी आवश्यकताओं के अनुरुप हिंदी को एक अलग रुप दिया। कुछ समीक्षकों का यह मानना है कि इसने हिंदी की संप्रेषणीयता में वृद्धि की है। इसमें नया प्रवाह पैदा किया । जटिलता को दूर कर इसे सरलता की ओर अग्रसर किया।आज हिंदी के विभिन्न शब्दों को वैश्विक स्वीकृति मिल रही है।भाषा में विविधता आई है। आज विज्ञापन की दुनिया की अलग हिंदी है,साहित्य की अलग हिंदी है तो फिल्मी संवादों की दूसरी हिंदी। हिंदी चैनलों की अलग हिंदी तो हिंदी अखबारों की पृथक् हिंदी ।

आज हिंदी शब्दों को वैश्विक स्वीकृति मिल रही है।अब तक लगभग 10,000 से अधिक शब्द अंग्रेजी इंसाइक्लोपीडिया में शामिल किए गए हैं। मानक अंग्रेजी हिंदी कोशों में हिंदी के हजारों शब्दों को शामिल किया गया है। समोसा,ढ़ोकला,अहिंसा,आतंक,महाराजा आदि विभिन्न शब्द कुछ अपभ्रंश रुप में तो कुछ ज्यों के त्यों शामिल किए गए हैं।

समीक्षकों के एक वर्ग का यह मानना है कि हिंदी समय के अनुरुप ढ़ल रही है। इन बदलावों से हिंदी की स्वीकार्यता बढ़ी है। हिंदी में एक नया प्रवाह आया है।इसकी गतिशीलता बढ़ी है।इसका काफी विस्तार हुआ है।बाजार पर इसकी पकड़ जबरदस्त बनी है। इन सभी कारणों से हिंदी अधिक समृद्ध हुई है ।

समीक्षकों के दूसरे वर्ग का कहना है वर्तमान में हिंदी का जो स्वरुप सामने आ रहा है,उससे भाषा विकृत हो रही है। भाषा की मौलिकता नष्ट हो रही है।भाषा की शुद्धता किनारे कर दी गई है।भाषा खिचड़ी हो गई है। पत्रिकाओं में भी हैल्थ खबरें, फिटनेस फंडा जैसे स्तंभ आसानी से देखने को मिलते हैं, मानो अंग्रेजी में हिंदी का छोंक लगा रहे हों। खिचड़ी भाषा के नाम पर भाषा का फूहड़ प्रयोग हो रहा है। ये रूप मीडिया को बिकाऊ बनाने में भले ही मददगार साबित हों,पर ये भाषा की मौलिकता को बिगाड़ते रहे हैं ।

आज बाजारवाद का वर्चस्व है।उत्पादक उपभोक्ता को लुटने में लगा है। यह बाजार की साजिश है । उपभोक्तावादी प्रवृत्ति की मंशा यही है कि उपभोक्ता का विवेक कमजोर हो, उनका संस्कार बिगड़े, वे बाजार के आकर्षण व जाल में फँस जाएं। यह सर्वविदित है कि संस्कार बिगाड़ने में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है ।

यह सच है कि हम वैश्वीकरण से अलग नहीं रह सकते है, किंतु दूसरी ओर अपनी संस्कृति व भाषा का भी त्याग नहीं कर सकते हैं। आज सरल, लचीली गतिशील हिंदी की आवश्यकता है,जिसमें पल – पल परिवर्तित हो रहे समय के अनुभवों को अभिव्यक्त किया जा सके। हमें बाजार में भी रहना है,किंतु बाजारु नहीं बनना है।

भारत की विकास गाथा एवं वैश्वीकरण में हिंदी एवं भारतीय भाषाओं का महत्व सर्वविदित है। पर्यटन, विज्ञान, वाणिज्य, व्यापार और मीडिया जैसे हर क्षेत्र में हिंदी का महत्व बढ़ रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आई वर्तमान क्रांति, विशाल बाजारों की उपलब्धता, व्यापारिक अवरोधों की समाप्ति, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश आदि से वैश्वीकरण में और भी तीव्रता

भूमंडलीकरण और आर्थिक उदारीकरण के मौजूदा दौर में हिंदी ने अपने महत्व, प्रासंगिकता और लोकप्रियता की वजह से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशेष पहचान बनाई है हिंदी अपनी व्यापक पहुंच एवं लोकप्रियता तथा बाजार सम्मोहन क्षमता के चलते एक शक्तिशाली भाषा के रूप में स्थापित होने की राह पर अग्रसर है। बड़ी-बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए भारत में अपना व्यवसाय कामयाब बनाने के लिए हिंदी एवं भारतीय भाषाओं का सहारा लेना व्यावसायिक मजबूरी है।बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपने व्यापारिक हितों के लिए वैश्विक हिंदी की संकल्पना कर रही हैं ।मीडिया एवं विज्ञापनों से भी हिंदी का बाजारीकरण हो रहा है। पर्यटन, प्रवासियों एवं भारतवंशियों ने हिंदी एवं भारतीय भाषाओं का वैश्विक स्तर पर काफी प्रसार किया है।

इक्कीसवीं सदी में प्रवासी भारतीयों के समान ही हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं ने भी अपना वैश्विक स्वरूप और अवधारणा निर्मित की हैं,जिसके मूल में भारतीयता की विश्व व्यापकता का भाव सर्वोपरि है।

****

सम्मान आपके विश्वास का

कदम कदम पर संकल्प हमारा
यही हमारा प्रयास,
ना टूटे कभी ये रिश्ता
सम्मान आपके विश्वास का।

कृषि, उद्योग और व्यवसाय का
शिक्षा तथा समृद्धि के द्वार का
खोलता जो हर पल रास्ता
जन -जन का बैंक है यह
नहीं किसी के खास का
सम्मान आपके विश्वास का ।
आंखें खुशी से नम हैं
जितनी तारीफ हो कम है
इसी से तो हम हैं
है डोर जन -जन की आस का
सम्मान आपके विश्वास का ।

विश्वास की डोर से जुड़ा है
यूकोजन का हर प्रयास,
जन -जन के सपनों को देते हम आकार
लिया है व्रत सबके विश्वास व उल्लास का
सार्थक होता सम्मान आपके विश्वास का

कदम कदम पर संकल्प हमारा
यही हमारा प्रयास,
ना टूटे कभी ये रिश्ता
सम्मान आपके विश्वास का।

साजन कुमार साह
प्रबंधक
ताड़र शाखा

.

.....पृष्ठ सं. 06 का शेषांश.....

उल्लेखनीय है । देश का समावेशी विकास तभी पूर्ण होगा जब विकास की रोशनी गांवों व कस्बों तक पूरी तरह पहुँचेगी ।

यह तभी संभव होगा जब जन जन स्थानीय संसाधन,प्रतिभा व कौशल के माध्यम से विकास का भागीदार बनेगा। इसमें सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम का योगदान वरदान से कम नहीं होगा ।

आइए! हम सभी एमएसएमई के माध्यम से ग्रामीण व अर्द्धशहरी क्षेत्रों सहित समग्र विकास करते हुए आत्मनिर्भर , समृद्ध एवं श्रेष्ठ भारत के नवनिर्माण का संकल्प लें।

****

सामाजिक सुरक्षा योजनाएं

देवेश कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय, भागलपुर

भारत की आबादी का एक बड़ा हिस्सा लंबे समय से बिना किसी प्रकार के स्वास्थ्य, दुर्घटना या जीवन बीमा से वंचित रहा है। प्रधानमंत्री जन धन योजना की सफलता से उत्साहित होकर भारत सरकार ने आम लोगों विशेष रूप से गरीब और कमजोर लोगों और असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के लिए एक सार्वभौमिक सामाजिक सुरक्षा प्रणाली बनाने की दिशा में काम करने का प्रस्ताव लाया। प्रधानमंत्री ने गरीबों और वंचितों के लिए पेंशन और बीमा कवर उपलब्ध कराने के लिए 9 मई 2015 को तीन सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का शुभारंभ किया। ये तीन योजनाएं प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना एवं अटल पेंशन योजना हैं। ये तीनों योजनाएँ दुर्घटना, मृत्यु या बुढ़ापे के समय में नागरिकों की रक्षा के लिए जन धन योजना के प्लेटफार्म पर आधारित हैं। इन तीनों योजनाओं की परिकल्पना सभी लोगों, मुख्य रूप से समाज के वंचित और कमजोर वर्गों को किफायती वित्तीय सुरक्षा प्रदान करने के लिए की गई थी। इन प्रमुख योजनाओं का उद्देश्य नागरिकों को जीवन की अनिश्चितताओं से बचाकर और दीर्घकालिक वित्तीय लचीलापन बढ़ाकर बीमा और पेंशन परिदृश्य को व्यापक बनाना है।

तीनों महत्वपूर्ण सामाजिक सुरक्षा योजना की संक्षिप्त जानकारी निम्नवत् है -

प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना (पीएमएसबीवाई)

प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना दुर्घटना में मृत्यु, पूर्ण या आंशिक विकलांगता के मामले में जोखिम कवरेज सुनिश्चित करने के लिए है।

दुर्घटना में मृत्यु और पूर्ण विकलांगता के लिए बीमा राशि 2 लाख रुपये है और आंशिक विकलांगता के लिए 1 लाख रुपए है। इसका सालाना प्रीमियम इस समय बढ़कर 20 रुपये हो गया है, जो ग्राहक के खाते से बैंक द्वारा सीधे ऑटो डेबिट कर लिया जाता है।

पात्रता: 18-70 वर्ष के आयु वर्ग के व्यक्ति जिनके पास एक व्यक्तिगत बैंक या डाकघर खाता है, योजना के तहत नामांकन के लिए पात्र हैं ।

लाभ: दुर्घटना के कारण मृत्यु या दिव्यांगता के लिए 20/- रुपये प्रति वर्ष की प्रीमियम पर 2 लाख रूपये (आंशिक विकलांगता के मामले में रु. 1 लाख) का दुर्घटना मृत्यु सह विकलांगता कवर मिलता है।

नामांकन: योजना के तहत नामांकन खाताधारक के बैंक की शाखा/बीसी प्वाइंट या बैंक की वेबसाइट पर या डाकघर बचत बैंक खाते के मामले में डाकघर में जाकर किया जा सकता है। योजना के तहत प्रीमियम खाताधारक के एकमुश्त शासनादेश के आधार पर ग्राहक के बैंक खाते से हर साल ऑटो डेबिट किया जाता है। योजना और प्रपत्रों के बारे में विस्तृत जानकारी (हिंदी, अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं में) https://jansuraksha.gov.in पर उपलब्ध है।

उपलब्धियां: 23.04.2025 तक पीएमएसबीवाई के तहत 51.06 करोड़ से अधिक कुल नामांकन हो चुके हैं और 1,57,155 दावों के लिए 3,121.02 करोड़ रुपये की राशि का भुगतान किया गया है।

प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना

यह महत्वपूर्ण सामाजिक सुरक्षा योजना है,जिसका पात्र व्यक्ति

लाभ उठा सकता है। यह एक साल की जीवन बीमा योजना है, जो किसी भी कारण से होने वाली मृत्यु को कवर करती है । इसका साल-दर-साल नवीकरण किया जाता है।

पात्रता: 18-50 वर्ष के आयु वर्ग के व्यक्ति जिनके पास एक व्यक्तिगत बैंक या डाकघर खाता है, योजना के तहत नामांकन के लिए पात्र हैं। 50 वर्ष की आयु पूरी करने से पहले योजना में शामिल होने वाले लोग नियमित प्रीमियम के भुगतान पर 55 वर्ष की आयु तक जीवन के जोखिम को जारी रख सकते हैं।

प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा मृत्यु के मामले में लोगों को लाभ देने के लिए है। यह बैंक खाता रखने वाले 18 से 50 आयु वर्ग के लोगों के लिए उपलब्ध है। इसका प्रीमियम ग्राहक के खाते से बैंक द्वारा सीधे ऑटो डेबिट कर किया जाएगा। एक व्यक्ति इस योजना को एक वर्ष के लिए या एक लंबी अवधि के लिए चुन सकता है। लंबी अवधि के विकल्प के मामले में, उसका खाता बैंक द्वारा हर साल ऑटो डेबिट कर लिया जाएगा।

प्रीमियम: प्रति सदस्य प्रति वर्ष 436 रुपये है। योजना के तहत नामांकन के समय दिए गए विकल्प के अनुसार, खाताधारक के बैंक/ डाकघर खाते से 'ऑटो डेबिट' सुविधा के माध्यम से एक किस्त में प्रीमियम काटा जाएगा। इसमें विलंबित भुगतान के साथ नामांकन कराने की सुविधा है।

विलंबित नामांकन नीचे वर्णित अनुसार आनुपातिक प्रीमियम के भुगतान के साथ संभव है;

क) जून, जुलाई और अगस्त में नामांकन के लिए – 436/- रुपये का पूर्ण वार्षिक प्रीमियम देय है।

ख) सितंबर, अक्टूबर और नवंबर में नामांकन के लिए – 342/- रुपये का आनुपातिक प्रीमियम देय है।

ग) दिसंबर, जनवरी और फरवरी में नामांकन के लिए – 228/- रुपये का आनुपातिक प्रीमियम देय है।

घ) मार्च, अप्रैल और मई में नामांकन के लिए – 114/- रुपये का आनुपातिक प्रीमियम देय है।

कवर 1 जून से 31 मई तक एक वर्ष की अवधि के लिए होगा, जिसके लिए निर्धारित प्रपत्रों पर नामित व्यक्तिगत बैंक/ डाकघर खाते से ऑटो-डेबिट के जरिए शामिल होने/ भुगतान करने का विकल्प हर साल 31 मई तक देना होगा।

लाभ: 436/- रुपये प्रति वर्ष की प्रीमियम पर किसी भी कारण से मृत्यु के मामले में 2 लाख रुपये का जीवन कवर अर्थात् किसी भी कारण से ग्राहक की मृत्यु होने पर 2 लाख रुपये का भुगतान किया जाएगा। नामांकन की तिथि से 30 दिनों की पैसे लेने की अवधि लागू होगी।

नामांकन: योजना के तहत नामांकन खाताधारक के बैंक की शाखा/बीसी पॉइंट या बैंक की वेबसाइट पर जाकर या डाकघर बचत बैंक खाते के मामले में डाकघर में किया जा सकता है। योजना के तहत प्रीमियम खाताधारक के एकमुश्त शासनादेश के आधार पर ग्राहक के बैंक खाते से हर साल ऑटो डेबिट किया जाता है । योजना और प्रपत्रों के बारे में विस्तृत जानकारी (हिंदी, अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं में) https://jansuraksha.gov.in पर उपलब्ध है।

उपलब्धियां: 23.04.2025 तक, पीएमजेजेबीवाई के अंतर्गत 23.63 करोड़ से अधिक कुल नामांकन हो चुके हैं और 9,19,896 दावों के लिए 18,397.92 करोड़ रुपये की राशि का भुगतान किया गया है।

अटल पेंशन योजना (एपीवाई)

अटल पेंशन एक महत्वपूर्ण समाजिक सुरक्षा योजना है। यह योजना विशेष रूप से असंगठित क्षेत्र में काम कर रहे गरीब लोगों के लिए वृद्धावस्था आय सुरक्षा के लिए भारत सरकार की नई पहल है। इसका आरंभ बजट प्रस्तावों 2015-16 में एक नई पहल के रूप में हुआ। यह पेंशन फंड नियामक एवं विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) के तहत, राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एनपीएस) के तहत आने के लिए असंगठित क्षेत्र में अबीमित कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित करने के लिए है।

यह योजना असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को, जो कुल कर्मचारियों की संख्या का 88% हैं, सेवानिवृत्ति के लिए स्वेच्छा से बचत करने को प्रोत्साहित करने के लिए है। यह वर्ष 2010-11 में शुरू की गयी स्वावलंबन योजना, का उन्नत संस्करण है जिसमें 60 के उम्र के बाद पेंशन लाभ के संबंध में स्पष्टता में कमी थी। भले ही यह उसका संस्करण है,तथापि इसकी खास विशेषताएं हैं,जो काफी महत्वपूर्ण है।

पात्रता : एपीवाई 18 से 40 वर्ष की आयु के सभी बैंक खाताधारकों के लिए खुला है जो आयकर दाता नहीं हैं और चुने गए पेंशन राशि के आधार पर देय योगदान अलग-अलग हैं । इसलिए, किसी भी ग्राहक द्वारा योगदान की न्यूनतम अवधि 20 साल या उससे अधिक है। पात्र श्रेणी के अंतर्गत सभी बैंक खाता धारक खातों के लिए ऑटो डेबिट सुविधा के साथ एपीवाई शामिल हो सकते हैं जिससे योगदान संग्रह शुल्क में कमी होगी।

लाभ: इस योजना में शामिल होने के बाद ग्राहक द्वारा किए गए योगदान के आधार पर उनकी 60 वर्ष की आयु के बाद ग्राहकों को गारंटीशुदा न्यूनतम मासिक पेंशन 1000 रुपये, 2000 रुपये, 3000 रुपये, 4000 रुपये या 5000 रुपये मिलती है। जो उनके योगदान पर निर्भर करता है एवं एपीवाई में शामिल होने की उम्र के आधार पर अलग अलग होता है ।

योजना के लाभों का संवितरण : इसके तहत मासिक पेंशन ग्राहक को मिलेगी, और उसके बाद उसके पति या पत्नी को और फिर उन दोनों की मृत्यु के बाद ग्राहक की 60 वर्ष की आयु में संचित पेंशन राशि, ग्राहक के नामांकित व्यक्ति को वापस कर दी जाएगी।

ग्राहक की असामयिक मृत्यु (60 वर्ष की आयु से पहले मृत्यु) के मामले में, ग्राहक का पति या पत्नी शेष निहित अवधि के लिए ग्राहक के एपीवाई खाते में योगदान जारी रख सकते हैं, जब तक कि मूल ग्राहक की उम्र 60 वर्ष पूरी न हो जाए ।

केंद्र सरकार द्वारा योगदान

न्यूनतम पेंशन की गारंटी सरकार द्वारा दी जाएगी, अर्थात, यदि योगदान के आधार पर संचित राशि निवेश पर अनुमानित रिटर्न से कम होती है और न्यूनतम गारंटी पेंशन प्रदान करने के लिए अपर्याप्त है, तो केंद्र सरकार ऐसी अपर्याप्तता को पूरा करने के लिए फंड देगी । वैकल्पिक रूप से, यदि निवेश पर प्रतिफल अधिक है, तो अभिदाताओं को बढ़ा हुआ पेंशन लाभ मिलेगा ।

भुगतान आवृत्ति

ग्राहक मासिक/तिमाही/छमाही आधार पर एपीवाई में योगदान कर सकते हैं।

योजना से निकासी: सरकारी सह-योगदान और उस पर वापसी/ ब्याज की कटौती पर कुछ शर्तों के अधीन सदस्य स्वैच्छिक रूप से एपीवाई से बाहर निकल सकते हैं ।

उपलब्धियां: दिसंबर 2024 तक इसके 7.25 करोड़ ग्राहक हैं और कुल कोष 43,370 करोड़ रुपये है।

जन धन से जन सुरक्षा भारत के नागरिकों के सर्वांगीण विकास के लिए वित्तीय समावेशन और वित्तीय सुरक्षा सुनिश्चित करता है ।

इन जन सुरक्षा योजनाओं की 10वीं वर्षगांठ पर आयोजित समारोह में भारत की वित्तमंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने कहा था कि योजनाओं का मुख्य फोकस नामांकन और दावों का डिजिटलीकरण और सरलीकरण करना रहा है। ऑनलाइन जन सुरक्षा पोर्टल के शुभारंभ ने नागरिकों के लिए बैंक शाखाओं या डाकघरों में जाए बिना सुविधाजनक तरीके से नामांकन करना संभव बना दिया है। दावों की प्रक्रिया को डिजिटल बनाने से तेजी से निपटान सुनिश्चित हुआ है, जिससे पीड़ित परिवारों को उस समय पर मदद मिल सकी, जब उन्हें इसकी सबसे अधिक जरूरत थी।

****
****

संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी। संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय स्वरूप होगा ।

****

डिजिटल बैंकिंग

बबलू दुसाध
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय , भागलपुर

आज जीवन का कण – कण सूचना, संचार व प्रौद्योगिकी से स्पंदित एवं संचालित है। कंप्यूटर, मोबाइल, इंटरनेट, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग और इंटरनेट ऑफ थिंग्स आदि डिजिटल क्रांति के संवाहक हैं। डिजिटल क्रांति के प्रभाव से बैंकिंग प्रणाली के स्वरूप में आमूलचूल परिवर्तन हुए हैं।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्रांतिकारी नवोन्मेषों ने बैंकिंग जगत का कायाकल्प कर इसे डिजिटल स्वरूप प्रदान किया है। बैंकिंग ने अपनी डिजिटल यात्रा में कई पड़ाव पार किए हैं। माइक्रोसॉफ्ट के संस्थापक बिल गेट्स ने कहा था कि – बैंकिंग जरूरी है, बैंक नहीं। आज यह सार्थक हो रहा है तथा डिजिटल नवोन्मेषों से बैंक मूर्त संस्थाओं में परिवर्तित हो रहे हैं। तकनीक विस्फोट के नए दौर में बैंकिंग अब स्थान एवं समय की सीमाएं पार कर 24*7*365 आधार पर 'कहीं भी' एवं 'कभी भी' हो गई है। बैंकिंग 'ब्रिक बैंकिंग' 'क्लिक बैंकिंग' में परिणत होकर माउस एवं अंगुलियों पर थिरकने लगी हैं। डिजिटल बैंकिंग का प्रभाव अप्रतिम प्रतीत हो रहा है।

तेजी से विकसित हो रहे प्रौद्योगिकी नवाचारों एवं समय की आवश्यकताओं के अनुरूप डिजिटल बैंकिंग तेजी से आगे बढ़ रही है। भारत में बायोमैट्रिक आधार पहचान,मोबाइल कनेक्टिविटी, इंटरनेट की उपलब्धता,फिनटेक आदि से डिजिटल बैंकिंग काफी आगे बढ़ रही है। ब्लॉकचेन,कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्वचालन /रोबोटिक्स मशीन लर्निंग और इंटरनेट ऑफ थिंग्स जैसी नई तकनीकों से डिजिटल बैंकिंग में पंख लग गए हैं।

डिजिटल ऋण बैंकिंग कायाकल्प का ही एक महत्वपूर्ण भाग है। डिजिटल ऋण में वेब प्लेटफॉर्म या मोबाइल ऐप के माध्यम से उधार देना, प्रमाणीकरण और क्रेडिट मूल्यांकन के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करना शामिल है। यह संभावित उधारकर्ताओं को किसी भी विश्वव्यापी स्थान से किसी भी इंटरनेट-सक्षम डिवाइस से ऋण उत्पादों के लिए आवेदन करने में सक्षम बनाता है। साथ ही, इसमें कर्जदाता कर्ज के निर्णयों की सूचना और बुद्धिमत्तापूर्ण ग्राहक संबंध का निर्माण करने के लिए डिजिटल डाटा का इस्तेमाल करता है।

डिजिटल बैंकिंग ग्राहक एवं बैंक दोनों की दृष्टि से लाभकारी है। इसके साथ ही डिजिटल बैंकिंग समय की पुकार है।

ग्राहक की दृष्टि से लाभकारी

24×7 बैंकिंग सुविधा – ग्राहक किसी भी समय मनी ट्रांसफर, बैलेंस चेक, पासबुक देख सकते हैं।
तेज़ और सरल – कतार में लगने की जरूरत नहीं, घर बैठे सभी सेवाएँ उपलब्ध हो जाती हैं।
कम लागत – डिजिटल ट्रांजैक्शन से चार्ज कम लगते हैं।
आधुनिक बैंकिंग सुविधाएं प्राप्त करने में सक्षम है।

बैंक के लिए लाभ

शाखा का भार कम – काउंटर ट्रैफिक घटता है और स्टाफ महत्वपूर्ण कार्यों पर ध्यान दे सकता है।
कम खर्च – नकद प्रबंधन और काउंटर सर्विस की लागत कम।
डेटा-ड्रिवेन सेवा – बेहतर ग्राहक विश्लेषण और लक्षित उत्पाद

बैंको में सूचना प्रोद्योगिकी आधारित व्यवसाय का योगदान

1. कोर बैंकिंग व्यवस्था : सूचना प्रौद्योगिकी के कारण आज बैंक की सभी शाखाएं आपस में जुड़ गई है और ग्राहक अपने खाते का संचालन किसी शाखा से करने में सक्षम हो गया है।

2. दुनिया के किसी भी कोने में बैंकिंग सुविधा प्रदान करने हेतु सक्षमता: सूचना प्रौद्योगिकी एवं इंटरनेट की मदद से आज कोई भी व्यक्ति बैकिंग सुविधा का लाभ किसी भी स्थान से एवं किसी भी समय ले सकता है।

3. ग्राहक को घर पर ही बैंकिंग सुविधा उपलब्ध कराना: इंटरनेट बैंकिंग, मोबाईल बैंकिंग यूपीआई आदि के माध्यम से खाता धारक अपने घर में बैठकर ही अपने बैंक खाते का प्रबंधन स्वयं कर सकते हैं।

4. 24 x 7 बैंकिंग सुविधा की उपलब्धता: आई टी की मदद से आज बैंकिंग सुविधा ग्राहक को 24 x 7 उपलब्ध है।

5. वैश्विक बैंकिंग व्यवस्था के साथ प्रतियोगिता में सहायक: आज के समय में बैंक सूचना प्रौद्योगिकी की मदद से वैश्विक स्तर पर बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध करवाने हेतु सक्षम हो पाए हैं।

6.सरल एवं सहज बैंकिंग: सूचना प्रौद्योगिकी के कारण किसी भी ग्राहक को बैंक में कतार लगने की आवश्यकता नहीं है एवं न ही किसी की मदद की आवश्यकता है। ऑनलाईन बैंकिंग एवं एम बैंकिंग व्यवस्था अत्यंत ही सरल हो गई है।

7.पारदर्शिता: सूचना प्रौद्योगिकी की सहायता से आप अपने खाते के लेन-देन को आसानी से देख सकते हैं। अपने खाते की निगरानी कर सकते हैं।

8. त्वरित सेवा: सूचना प्रोद्योगिकी की सहायता से बैंक अपने ग्राहक को इंटरनेट बैंकिंग, मोबाईल बैंकिंग एवं यूपीआई आदि के माध्यम से त्वरित सेवा प्रदान करने में सक्षम हैं।

9. खाते की निगरानी सरल : बैंक भी अपने ग्राहक के खाते की निगरानी आसानी से कर सकते हैं। बैंकों के पास पर्याप्त डाटा एवं तकनीकी साधन मौजूद हैं।

10. वित्तीय एवं आर्थिक अपराधों की रोकथाम में सहायक: सूचना प्रौद्योगिकी की सहायता से बैंक किसी भी खाते की संपूर्ण जानकारी तुरंत जुटा सकता है, जो कि किसी अपराध की रोकथाम में अत्याधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सूचना प्रोद्योगिकी पर आधारित बैंकिंग प्लेटफार्म

1. एटीएम / डेबिट कार्ड: नकद निकासी का सबसे आसान तरीका है एटीएम मशीन एवं खरीदारी के समय कार्ड स्वेप करके भुगतान किया जा सकता है।

2. इंटरनेट बैंकिंग: इंटरनेट के माध्यम से बैंकिंग लेन देन घर से किया जा सकता है।

3. मोबाईल बैंकिंग: आपका बैंक आपके हाथों में ही है, मोबाईल बैंकिंग के माध्यम से बैंकिंग सुविधाएं आपकी उंगलियों के इशारे पर ही संचालित होती हैं।

4. इंटरनेट पेमेंट गेटवे: भुगतान का एक सरल साधन है।

5. आरटीजीएस / नेफ्ट: एक बैंक के खाते से दूसरे बैंक के खाते में बड़ी राशि को अंतरित किया जा सकता है।

6. स्विफ्ट: विदेशों में भुगतान हेतु स्विफ्ट का उपयोग किया जाता है। इसके माध्यम से मिनटों में पैसा दुनिया के किसी भी कोने में भेजा जा सकता है।

7. यूपीआई (यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस): एक आंकड़े के अनुसार भीम एप्प के लगभग 128 मिलियन से अधिक सक्रिय उपयोगकर्ता हैं। भीम एप्प लगभग 20 भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हो चुका है। लगभग सभी बड़े बैंक इससे जुड़े है और सुरक्षित यूपीआई से लेन देन की सुविधा उपलब्ध कराते हैं। इसमें मोबाइल नंबर के सहारे आसानी से पैसा भेजा जा सकता है। इतना ही नहीं अगर आप भी इसके जरिए पैसे मंगवाना चाहते है तो इसका तरीका भी बेहद आसान है।

8. वेब आधारित ऋण प्रक्रिया: आजकल ऋण लेने हेतु बैंकों के चक्कर नहीं काटने पड़ते हैं। लगभग सभी बैंक अपनी वेबसाइट से प्राप्त ऋण प्रस्ताव प्राप्त कर उसे प्रोसेस करने में लगे हैं।

बैंकिंग में सूचना प्रद्योगिकी : चुनौतियां

भारत की अधिकांश आबादी ग्रामों में निवास करती है। आज भी बहुत से गांव ऐसे हैं, जहां मूलभूत सुविधाओं का भी अभाव है एवं आर्थिक स्थिति ऐसी है कि जनसंख्या के एक भाग का बैंकों में खाता तक नहीं है। ऐसी स्थिति में सूचना प्रोद्योगिकी की पहुंच उन तक पहुंचा पाना आसान नहीं है। यह बहुत ही चुनौती है।

सूचना प्रौद्योगिकी ने बैंकिंग को बहुत सहज एवं सरल बना दिया है परंतु इसका उपयोग करते समय उतना ही सजगता की आवश्यकता है। दिन—प्रतिदिन तकनीक का प्रसार बढ़ता जा रहा है। आजकल लोग नगद लेन देन के बजाए डिजिटल पेमेंट को ज्यादा महत्व देते है। ऐसे में आवश्यकता है—सावधान एवं सजग रहने की । ज्यों ज्यों तकनीक का प्रसार बढ़ रहा है इससे जुड़े अपराध और अपराध के नए नए तरीके भी बढ़ रहे हैं। ऐसे में हमें निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए:

1. केवल आधिकारिक स्त्रोत से एप्प डाउनलोड करें ।
2. अपने खाते से संबंधित जानकारी जैसे खाता नं., एटीएम कार्ड नं., एटीएम पासवर्ड, ओटीपी किसी के साथ साझा न करें।
3. एटीएम मशीन में एटीएम कार्ड का प्रयोग करते समय पूर्ण सावधान रहें । एटीएम मशीन की जांच करें कि कहीं कोई अतिरिक्त डिवाइस तो नहीं लगा है जिससे कि आपके एटीएम का क्लोन तैयार किया जा सके।
4. ई कॉमर्स के माध्यम से खरीदारी करते समय संबंधित बेवसाइट की वास्तविकता सुनिश्चित कर लें। यदि कोई अपराध होता है तो इसकी सूचना तुरंत अपने बैंक को दें एवं साथ ही स्थानीय पुलिस थाने को लिखित में शिकायत दर्ज कराएं ताकि अपराधियों तक जल्द पहुंचा जा सके।
5. आजकल फर्जी कॉल कर के ग्राहक से उनके कार्ड की डिटेल ले ली जाती है एवं खाते से पैसा निकाल लिया जाता है। यदि ऐसा कोई कॉल आए तो बिलकुल भी रिस्पांस न करें और कॉल डिस्कनेक्ट कर दें।
6. इंटरनेट बैंकिंग अपने ही लेपटॉप, डेस्कटॉप, या मोबाईल पर ही उपयोग करें और अपना यूजर आई डी एवं पासवर्ड सेव न करें।
7. मोबाईल, लेपटॉप एवं डेस्कटॉप पर एंटीवायरस अवश्य डलवाएं।
8. अपने खाते में बैलेंस की जांच करते रहें।
9. कोई अनजान लिंक/कॉल पर क्लिक न करें।
10. एटीएम कार्ड या मोबाईल खो जाने पर तुरंत हॉटलिस्ट कराएँ।
11. क्यू आर कोड स्कैन करते समय राशि चेक करें।
12. एप्प में लॉगिन करके ही ट्रांजैक्शन करें—स्क्रीनशॉट या स्क्रीन शेयर न करें।

डिजिटल अर्थव्यवस्था एवं बैंकिंग को बढ़ाने के लिए विभिन्न हितधारकों यथा सरकार,भारतीय रिजर्व बैंक एवं बैंक काफी प्रयास कर रहे हैं,जिसके उत्साहवर्धक परिणाम भी प्राप्त हो रहे हैं। सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए कि डिजिटल बैंकिंग का लाभ अनुकूल तरीके से देश के प्रत्येक उपभोक्ता तक पहुंच सके, इन क्षेत्रों को नियमित रूप से प्रोत्साहित कर रही है।

इस दिशा में भारत सरकार द्वारा 2015 में 'डिजिटल इंडिया' कार्यक्रम आरंभ किया गया। भारत सरकार द्वारा भारतनेट योजना के तहत सभी गांवों को फाइबर नेट से जोड़ना जारी है। इससे डिजिटल अर्थव्यवस्था को अधिक मजबूती मिलेगी। इसी कड़ी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वित्तीय समावेशन को और ज्यादा व्यापक बनाने के उद्देश्य से आजादी के अमृत काल खंड में अक्टूबर,22 में देश के 75 जिलों में 75 डिजिटल बैंकिंग इकाइयां (डीबीयू) राष्ट्र को समर्पित किया था।

इस प्रकार हम देखते हैं कि डिजिटल बैंकिंग की यात्रा अनवरत जारी है एवं इसमें नित्य नए आयाम जुड़ते जा रहे हैं। आवश्यकता है सजगता एवं सतर्कता के साथ डिजिटल का सफर जारी रखने की ताकि गंतव्य तक पहुँचा जा सके।

****

राजभाषा अधिनियम,1963 की धारा 3 (3) के अंतर्गत जारी होने वाले 14 प्रकार के कागजात द्विभाषी होने चाहिए। कागजातों की सूची इस प्रकार है –

1.सामान्य आदेश 2. अधिसूचनाएं 3. प्रेस विज्ञप्तियाँ 4. संविदाएं 5. करार 6. लाइसेंस 7. परमिट 8. नोटिस 9. टेंडर के फॉर्म 10. संकल्प 11. नियम 12.संसद के एक सदन में या दोनों सदनों में प्रस्तुत सरकारी – पत्र (रिपोर्टों के अलावा) 13. संसद के एक सदन में या दोनों सदनों में प्रस्तुत प्रशासनिक व अन्य रिपोर्टें 14. प्रशासनिक या अन्य रिपोर्ट (संसद के एक सदन या दोनों सदनों में प्रस्तुत की गई रिपोर्टों के अलावा)

करनाल से मसूरी की अविस्मरणीय यात्रा

योगेश कुमार
प्रबंधक
अंचल कार्यालय , भागलपुर

यादें उन दिनों की हैं,जब मैं करनाल की एक शाखा में पदस्थापित था। जीवन की आपाधापी से मन बोझिल सा हो गया था। सुबह की चाय की चुस्कियों के साथ समाचार पत्र के पन्ने पलट रहा था। पत्र में प्रकाशित लेख में एक शेर ने मेरा ध्यान बरबस खींच लिया –

सैर कर दुनिया की ग़ाफ़िल ज़िंदगानी फिर कहाँ
ज़िंदगी गर कुछ रही तो ये जवानी फिर कहाँ।

जीवन की भागदौड़ में जब मन थकने लगे, तब पहाड़ों की ओर रुख करना जैसे आत्मा को फिर से जीवंत कर देता है। फिर क्या था, मैने परिवार के सदस्यों के साथ मसूरी यात्रा की योजना बनाई। हमारी यात्रा शुरू हुई ऐतिहासिक शहर करनाल से और समाप्त हुई मसूरी की वादियों में, जहाँ मानों प्रकृति ने अपने रंगों से स्वर्ग रच रखा है। हमने एक आरामदायक कार बुक किया और निकल पड़े मसूरी की वादियों की ओर। सुबह-सुबह जब सूरज की पहली किरणें धरती को छूती हैं, तब करनाल से मसूरी की ओर निकलना एक सुखद अनुभव होता है। सड़कें साफ-सुथरी और हरियाली से भरी। जैसे-जैसे वाहन आगे बढा, शहरी हलचल पीछे छूटती गई। खुली खिड़की से बाहर झांकते हुए हम प्रकृति के बदलते रंगों को निहारते रहे। कहीं लहलहाते फसल और कहीं दूर-दूर तक फैली हरियाली — यह सब मन को सुकून देने वाला था। करनाल से मसूरी की यात्रा का हमारा पहला पड़ाव हरिद्वार था।

करनाल से लगभग 160 किलोमीटर की दूरी पर गंगा नदी के किनारे बसा एक पवित्र शहर हरिद्वार। करनाल से सुबह-सुबह निकलते ही मन में उत्साह था। जैसे-जैसे हम हरिद्वार की ओर बढ़ते गए, वातावरण में एक आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार होने लगा। गंगा के किनारे स्थित यह शहर भारत की धार्मिक आत्मा का प्रतीक है। यहाँ पहुँचते ही वातावरण में एक आध्यात्मिक ऊर्जा महसूस होने लगी। यहां की हर की पौड़ी घाट में गंगा आरती का दृश्य हमें दिव्य ऊर्जा से भर दिया। गंगा की कलकल करती धारा, दीपों से जगमग घाट , मंत्रों की गूंज आदि से मेरे मन में भी आध्यात्मिकता का संचार हो गया तथा शांति का अनुभव हुआ। हरिद्वार के बाजारों में घूमते हुए वहाँ की स्थानीय मिठाइयाँ जैसे बाल मिठाई और रबड़ी का स्वाद लिया। मंदिरों की भव्यता और वहाँ की संस्कृति ने मन मोह लिया।

हरिद्वार से योग की अंतरराष्ट्रीय राजधानी के रूप में प्रसिद्ध ऋषिकेश पहुँचा। यहाँ लक्ष्मण झूला और राम झूला का आनंद लिया।

यहां के रिवर राफ्टिंग का रोमांच, गंगा की लहरों पर नाव चलाना और पानी की ठंडी बौछारें चेहरे पर पड़ना एक साहसिक अनुभव रहा। ऋषिकेश में एक आश्रम में विश्राम किया। इस दौरान आश्रम की पवित्रता ने हमें खूब प्रभावित किया।

दूसरा पड़ाव देहरादून था। इसके बाद सुबह देहरादून की यात्रा आरंभ की,जो आधुनिकता और प्राकृतिक सुंदरता का अद्भुत संगम है। हरिद्वार से देहरादून की यात्रा पहाड़ी रास्तों से होकर गुजरती है। रास्ते में हरियाली और पहाड़ों की सुंदरता ने मन को मंत्रमुग्ध कर दिया। देहरादून पहुँचते ही वहाँ की शांति और सुव्यवस्थित वातावरण ने स्वागत किया। यह बहुत की मनभावन था। मन गदगद हो गया।

देहरादून में सबसे पहले हमने फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट का भ्रमण किया। ब्रिटिश काल की वास्तुकला और वहाँ का हरित परिसर अत्यंत मनमोहक था। इसके बाद टपकेश्वर महादेव मंदिर गए, जो एक गुफा में स्थित है और शिवलिंग पर प्राकृतिक रूप से पानी की बूंदें टपकती हैं – एक अद्भुत दृश्य।

रॉबर्स केव (गुच्चुपानी) में पानी के बीच चलने का अनुभव रोमांचक था। वहाँ की गुफाओं में बहता पानी और ठंडक ने गर्मी से राहत दी। देहरादून के बाजारों में खरीदारी करते हुए वहाँ की स्थानीय हस्तकला और ऊनी वस्त्रों को देखा।

मेरी यात्रा का तीसरा पड़ाव पहाड़ों की रानी मसूरी रहा। देहरादून से मसूरी की ओर बढ़ते हुए रास्ते में बादलों का साथ मिला। जैसे -जैसे ऊँचाई बढ़ती गई, वैसे-वैसे ठंडापन बढ़ता गया। मसूरी पहुँचते मानों ठंडी हवा और बादलों ने हमारा स्वागत किया। मन आह्लादित हो गया। वहां मॉल रोड पर टहलना एक अलग ही अनुभव था। वहाँ की चहल-पहल, दुकानों की रौनक और पहाड़ी संस्कृति ने मन को आनंदित किया।

गन हिल पॉइंट से मसूरी का विहंगम दृश्य देखा – बादलों के बीच से झांकते पहाड़ और नीचे फैली घाटियाँ।

केम्प्टी फॉल्स में झरने के नीचे नहाने का अनुभव रोमांचक था। वहाँ की प्राकृतिक सुंदरता और ठंडे पानी ने सारी थकान मिटा दी। इसके बाद लाल टिब्बा गए, जो मसूरी का सबसे ऊँचा स्थान है। वहाँ से हिमालय की चोटियों को देखना एक दिव्य अनुभव था।

इस यात्रा में मैंने केवल स्थानों को नहीं देखा, बल्कि जीवन का अनुभव किया। हरिद्वार की आस्था, देहरादून की शांति और मसूरी की सुंदरता– तीनों ने मिलकर एक ऐसा अनुभव दिया, जिसे शब्दों में बयां करना मुश्किल है। पहाड़ों की गोद में बिताए गए ये दिन जीवन भर याद रहेंगे।

करनाल से मसूरी तक की यह यात्रा मेरे जीवन की सबसे सुंदर यात्राओं में से एक रही। यह यात्रा केवल स्थलों की नहीं थी, बल्कि आत्मा की यात्रा थी – जहाँ मैंने खुद को प्रकृति के करीब पाया, जीवन की सादगी को महसूस किया और आस्था, संस्कृति तथा सौंदर्य का अद्भुत संगम देखा।

मसूरी की यात्रा ने हमें सिर्फ पहाड़ों की सुंदरता नहीं दिखाई, बल्कि जीवन की सरलता, शांति और आत्मीयता का अनुभव भी कराया। करनाल से शुरू हुई यह यात्रा हमें एक नई दृष्टि दे गई कि कभी-कभी जीवन की सबसे सुंदर बातें उन रास्तों में छुपी होती हैं जहाँ हम जाने की हिम्मत नहीं करते हैं। यह यात्रा हमें सिखा गई कि प्रकृति के पास हर सवाल का जवाब है — बस हमें उसकी ओर चलना होता है।

वार्षिक कार्यक्रम 2025-26
हिंदी पत्राचार का लक्ष्य

'क' क्षेत्र से ' क' क्षेत्र	100 %
'क' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र	100 %
'क' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र	70 %

चाहत

अमित कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक
एसएमई व कृषि हब, भागलपुर

गाँव का नाम था मझौली। पहाड़ों के बीच बसा हुआ, बादलों से खेलता हुआ। हर सुबह सूरज की पहली किरण सबसे पहले राम के छोटे-से मिट्टी के घर की दीवार को छूती थी।

राम का बाप, जगन्नाथ, गाँव का एकमात्र बढ़ई था। उसके हाथों से निकले खाट, कुर्सी और दरवाजे पूरे इलाके में मशहूर थे। लेकिन पिछले साल बाढ़ ने सब कुछ बहा ले गया था। औजार डूब गए, लकड़ी सड़ गई, और जगन्नाथ की कमर में चोट लगी जो फिर कभी ठीक नहीं हुई। अब घर में सिर्फ़ एक चूल्हा जलता था और उसमें भी आग कम, धुआँ ज़्यादा।

राम स्कूल जाता था। पाँच किलोमीटर पैदल। रास्ते में नदी पार करनी पड़ती थी, जिसके ऊपर लकड़ी का टूटा-फूटा पुल था। बारिश के दिनों में पुल हिल जाता और बच्चे डर के मारे स्कूल छोड़ देते। राम नहीं छोड़ता था। वह सोचता, "पढ़ाई ही एक दिन हमें यहाँ से निकालेगी।"

स्कूल में मास्टरजी ने एक दिन ऐलान किया, "जिला स्तर की विज्ञान प्रदर्शनी होने वाली है। जो बच्चा सबसे अच्छा मॉडल बनाएगा, उसे शहर के बड़े स्कूल में दाखिला और पूरी छात्रवृत्ति मिलेगी।"
राम की आँखें चमक उठीं। शहर। चमक और दमक ,जहां से वह अभी कोसों दूर है। जहाँ लाइब्रेरी में किताबें दीवार तक भरी होती हैं।
जहाँ उसके बाप का इलाज हो सकता है। उसने उसी दिन फैसला कर लिया कि वह प्रदर्शनी में हिस्सा लेगा।

लेकिन समस्या यह थी कि उसके पास कुछ भी नहीं था। न मोटर, न तार, न बैटरी, न लोहा। घर में सिर्फ़ बाप की पुरानी औजार-पेटी थी जिसमें जंग लगे छेनी-हथौड़े पड़े थे। माँ ने कहा, "बेटा, छोड़ो ये सपने। हमारा नसीब यही है।" राम ने मुस्कुरा कर कहा, "माँ, नसीब खुद नहीं बदलता, उसे बदलना पड़ता है।"
अगले दिन से राम का संघर्ष शुरू हुआ।
सुबह स्कूल जाने से पहले वह जंगल जाता। पुरानी साइकिल के टूटे पार्ट्स इकट्ठे करता। नदी किनारे पड़ी प्लास्टिक की बोतलें, टिन के डब्बे, बांस की टहनियाँ—सब कुछ उठा लाता। दोपहर में जब गाँव वाले खेतों में होते, वह चुपके से उनके कबाड़ के ढेर से कुछ-कुछ चुन लाता। कोई पूछता तो कहता, "खिलौना बना रहा हूँ।"
रात में मिट्टी का दीया जलाकर वह काम करता। उसने सोचा था कि वह एक ऐसा मॉडल बनाएगा जो गाँव की बिजली की समस्या हल कर दे—एक छोटा सा पनचक्की वाला जेनरेटर, जो नदी के बहाव से बिजली बनाए। मास्टरजी ने किताब में दिखाया था - हाइड्रोइलेक्ट्रिक पावर का मॉडल। राम ने ठान लिया, वही बनाएगा।
लेकिन सामान कहाँ से?
एक दिन वह शहर जाने वाली बस में चढ़ गया। जेब में सिर्फ़ आठ रुपये थे—दो रुपये का टिकट और छह रुपये उसने बचाए थे। बस ड्राइवर ने पूछा, "कहाँ जाना है छोटे?" राम ने कहा, "कबाड़ी बाज़ार।" ड्राइवर हँसा, "अरे, तू तो खुद कबाड़ लग रहा है।"वह सुनकर चुपचाप रह गया । उसका चेहरा उतरा हुआ था,लेकिन चाहत बनी हुई थी।

कबाड़ी बाज़ार में उसने देखा—पुरानी डायनमो, टूटी साइकिलें, जंग लगे पंखे। उसने दुकानदार से मिन्नत की, "चाचा, मुझे बस एक पुरानी डायनमो दे दो। पैसे बाद में दे दूँगा।" दुकानदार ने उसकी आँखों में कुछ ऐसा पढ़ा जो शायद वह खुद अपने बचपन में खो गया था। उसने एक जंग लगी डायनमो उठाई और कहा, "ले जा, लेकिन वादा कर कि कुछ बनाकर दिखाएगा।"

रामू घर लौटा तो रास्ते में बारिश शुरू हो गई। डायनमो उसके कंधे पर थी, वह कीचड़ में गिरा, घुटने छिल गए, लेकिन डायनमो को गीला नहीं होने दिया। उसने अपनी शर्ट उतार कर उसे लपेट लिया।

अब बारी थी बनाने की।

रात-रात भर जागता। बाप की पुरानी औजार-पेटी से छेनी-हथौड़ा निकाला। बांस की टहनियों से फ्रेम बनाया। प्लास्टिक की बोतलों से टरबाइन के ब्लेड। एक पुराने छाते की छड़ से शाफ्ट। डायनमो को जोड़ा। तार नहीं थे तो उसने माँ की पुरानी साड़ी के रेशमी धागे निकाल कर ताँबे के तार बनाए—घंटों मेहनत करके।

गाँव वालों को लगा कि पागल हो गया है। कोई हँसता, "ये क्या बवंडर बना रहा है?" कोई दया करता, "छोड़ बेटा, पढ़ाई कर।" लेकिन रामू को अब कुछ सुनाई नहीं देता था।

एक रात तूफान आया। छप्पर उड़ गया। उसका आधा बना मॉडल बारिश में भींग गया। सुबह उठकर देखा तो सारी मेहनत बर्बाद। वह ज़मीन पर बैठ गया और रोने लगा। पहली बार रोया।

माँ ने आकर गले लगाया, "बस कर बेटा।"

रामू ने आँसू पोंछे और कहा, "माँ, एक बार और।"

उसने फिर शुरू किया। इस बार और मजबूती से। बांस की जगह लोहे की पुरानी रॉड इस्तेमाल की। टरबाइन के ब्लेड को और सही आकार दिया। नदी किनारे जाकर दस-दस बार टेस्ट किया। पहली बार जब बल्ब जला—एक छोटा सा 2 वाट का बल्ब—तो उसकी आँखों में आँसू आ गए। बल्ब की रोशनी में उसने अपने बाप का चेहरा देखा जो सालों बाद मुस्कुराया था।

प्रदर्शनी का दिन आया। रामू अपना मॉडल लेकर बस में बैठा। मॉडल इतना बड़ा था कि बस के अंदर जगह नहीं बनी। ड्राइवर ने कहा, "ऊपर छत पर बाँध देता हूँ।" रामू ने मना किया, "नहीं अंकल, ये मेरा सपना है, टूट जाएगा।" वह खुद मॉडल को गोद में लेकर खड़ा रहा। चार घंटे का सफर।

जिला मुख्यालय पहुँचा तो वहाँ सैकड़ों बच्चे थे। शहर के बच्चे। चमचमाते मॉडल। रोबोट, सोलर कार, कंप्यूटराइज़्ड सब-कुछ। रामू का मॉडल सबसे फटा-पुराना लग रहा था। जजों ने जब पूछा, "ये क्या है?" तो रामू ने शांत स्वर में कहा, "सर, ये मेरे गाँव की बिजली है।"

उसने मॉडल को पानी की छोटी नाली में रखा। टरबाइन घूमी। डायनमो ने करंट बनाया। तीन बल्ब जल उठे। और साथ में एक छोटा सा पंखा भी चल पड़ा। हॉल में सन्नाटा छा गया।

एक जज ने पूछा, "इसे तुमने अकेले बनाया?"

रामू ने सिर झुकाकर कहा, "नहीं सर। मेरे गाँव ने बनाया। नदी ने, जंगल ने, कबाड़ ने, बारिश ने, और मेरी माँ की साड़ी ने। मैं तो बस जोड़ता रहा।"

प्रथम पुरस्कार रामू को मिला।

जब स्टेज पर नाम पुकारा गया तो रामू के पैर काँप रहे थे। उसने माइक लिया और सिर्फ़ एक वाक्य कहा, "जहाँ चाह होती है, वहाँ राह निकल आती है।"

शहर के बड़े स्कूल में दाखिला मिला। छात्रवृत्ति मिली। बाप का ऑपरेशन हुआ। माँ के चेहरे पर फिर मुस्कान लौटी। लेकिन रामू हर छुट्टी में गाँव आता और बच्चों को सिखाता—कबाड़ से कुछ बनाना। उसने गाँव में एक छोटी सी वर्कशॉप खोल दी। नाम रखा—चाह।

आज मझौली गाँव में बिजली जाती नहीं, आती है बच्चों के बनाए छोटे-छोटे पनचक्की जेनरेटरों से। और हर घर की दीवार पर लिखा होता है—

"जहाँ चाह होती है, वहाँ राह निकल आती है।"

संविधान का अनुच्छेद 351

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए,उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत:अन्य

बैंक में नौकरी का पहला दिन

अल्पना कच्छप
विधि अधिकारी
अंचल कार्यालय , भागलपुर

मेरी पहली नौकरी को आज लगभग 7 माह हो गए। बैंक में पहले दिन एवं अब तक के सफर को बयां करते हुए मैं बहुत रोमांचित हूँ। बैंक के पहले दिन से लेकर अब तक का सफर रोमांच ,खुशी, उत्साह एवं चुनौतियों का मिश्रण रहा है। आज जब मैं पहले दिन को याद करती हूँ ,जब मुझे ट्रेनिंग के लिए भोपाल जाना था। मन में एक अलग ही उत्साह था एवं और साथ में नौकरी पाने की खुशी भी थी। पहले दिन मुझे कई राज्यों से आए हुए अन्य लोगों से भी मिलने का अवसर प्राप्त हुआ,जो मेरी तरह ही प्रशिक्षण के लिए आए थे। विधि अधिकारी समूह में कुल 17 लोग थे। प्रशिक्षण के दौरान यूको बैंक के बारे में जानने का मौका मिला। साथ ही बैंक कैसे कार्य करता है, इसकी भी जानकारी प्राप्त हुई, विधि अधिकारी के दायित्वों से भी परिचित कराया गया। अपने अपने कार्य के महत्व को दर्शाते हुए टीम वर्क की महत्ता का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण संस्थान में संकाय सदस्य एवं अन्य स्टाफ सदस्यों का व्यवहार बहुत अच्छा था। साथियों के साथ औपचारिक अनौपचारिक बातें होती रही । प्रशिक्षण के दौरान ज्ञान बढ़ता गया एवं प्रशिक्षण समाप्ति की अवधि निकट आने लगी।ज्यों ज्यों प्रशिक्षण समाप्ति की अवधि निकट आने लगी,त्यों त्यों पदस्थापना की चिंता सताने लगी। आखिर प्रशिक्षण समाप्त हुआ एवं वह दिन आ गया,जिसकी मुझे प्रतीक्षा थी । हम सभी लोगों को पदस्थापना स्थल के बारे में बताया गया। कुछ साथियों के चेहरे पर खुशी थी,आखिर उन्हें गृह राज्य में जो पस्थापना मिली थी। इसी क्रम में मुझे अपने पदस्थापना स्थल भागलपुर का पता चला। भागलपुर शहर, नाम तो सुना हुआ,किंतु अपरिचित।

प्रशिक्षण के दोस्तों का साथ छूटा एवं जिंदगी के नए पड़ाव के लिए निकल पड़ी। मन में बहुत सारे भाव, कौतूहल, आशंकाएं और भी बहुत कुछ। नई नौकरी, नया शहर ।

इन भावों के साथ मैं भागलपुर शहर पहुँची। नियुक्ति का पहला दिन हमेशा यादगार होता है। सुबह-सुबह नए उत्साह के साथ कार्यालय पहुँचना, औपचारिकताओं को पूरा करना और सहकर्मियों से परिचय—यह सब एक नए अध्याय की शुरुआत थी। आशंकाएं समाप्त होने लगीं,क्योंकि कार्यालय में सभी लोगों का साथ मिला। धीरे धीरे चीजें सामान्य होने लगीं। कार्यालय में पहले ही पदस्थापित वरिष्ठ विधि अधिकारी का सहयोग प्राप्त हुआ। धीरे धीरे कार्य समझने लगीं। मैने कोशिश की कि घर याद न आए ताकि कार्य सीख सकूँ। अपने कार्य में तल्लीन हो गई। मेरे वरिष्ठ विधि अधिकारी के तबादले के बाद मुझे अपने विभाग का प्रभार दिया गया,तबसे मैं अपना कार्य तल्लीन होकर कर रही हूँ। समय के साथ- साथ ज्ञान भी बढ़ता जा रहा है। मैंने महसूस किया कि विधि अधिकारी का कार्य केवल फाइलों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह बैंक की नीतियों, ग्राहकों के हितों और कानूनी प्रावधानों के बीच एक सेतु का काम करता है।

आज जब मैं अपने सात माह के सफर को याद करती हूँ तो मुझे आश्चर्य होता है कि मैं अपने राज्य से बाहर रहकर किस प्रकार अपने जीवन को आगे बढ़ाने में सफल हो रही हूँ।

आज, जब मैं पीछे मुड़कर देखती हूँ, तो यह सफर केवल नौकरी का अनुभव नहीं बल्कि एक सतत सीखने की प्रक्रिया रहा है। बैंकिंग क्षेत्र में विधि अधिकारी की भूमिका समय के साथ और भी महत्वपूर्ण हो गई है। डिजिटल बैंकिंग, साइबर अपराध और बदलते नियामक ढाँचे ने इस पद को और अधिक जिम्मेदार बना दिया है। पहले दिन की उत्सुकता से लेकर सात माह का यह सफर चुनौतियों, अवसरों और सीख से भरा रहा है।

जीवन उत्सव है

सुभाष चंद्र साह
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय , भागलपुर

जीवन आनंद है, एक उत्सव है, एक यात्रा है। जीवन भगवान का दिया प्रसाद है, इसे विषाद न बनाएं। अंतस का आनंद ही जीवन का सर्वस्व है। परिस्थितियों से अप्रभावित नहीं होना या उस पर विजय प्राप्त करना ही स्वत्व की पहचान है। स्वयं की दिव्यता को पहचान कर जीवन को उत्सव के रूप में हृदयंगम करना ही हमारा साध्य है। हमें स्वयं को ही उत्सव बना लेना है। हम जैसे भी हैं, जो भी हैं, उसके प्रति सच्चे रहना है। हम स्वयं अपने मूल स्वरूप में रहें। अत: किसी का अनुकरण करने का प्रयास न करें। हमारा मूल स्वरूप सत् चित् आनंद है। स्वयं होना ही आनंद है। जीवन एक यात्रा है, अपनी यात्रा में सृजन की आवश्यकता की आकांक्षा रखते हुए उत्सव की तैयारी करें।

अंतस का आनंद ही जीवन का सर्वस्व है। यह आनंद सभी इच्छाओं, दुखों और द्वंद्वों से मुक्ति की स्थिति है, जहाँ जीव परम आनंद को प्राप्त करता है। आंतरिक खुशी,जो आत्मा से निकलती है, ही जीवन का सबसे बड़ा सार और लक्ष्य है, न कि बाहरी भौतिक सुख-सुविधाएं। यह खुशी , शांति व आनंद ध्यान, प्रेम, कृतज्ञता, और ईश्वर से जुड़ाव से मिलता है, जो हमें स्थायी संतोष और उद्देश्य प्रदान करता है, जिससे हम जीवन के उतार-चढ़ावों के बावजूद शांत और पूर्ण महसूस करते हैं।

मानव जीवन पाना सौभाग्य की बात है। महाभारत में कहा गया है कि – न हि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित्। यह ईश्वर का सबसे बड़ा वरदान है। मनुष्य का जीवन ही खुशियों का संसार है। इसलिए हमें सदा खुश रहना चाहिए, लोगों से मिलकर प्यार बांटना चाहिए। हर दिन हर पल हमारे लिए उत्सव के समान है। जीवन सिर्फ उत्सव ही नहीं है बल्कि महोत्सव है या हम यूं कह सकते हैं मानव जीवन का हर पल त्योहारों का त्योहार है। इसलिए हर पल को हमें यादगार बनाना चाहिए।

भारत की मनीषा जीवन को आंतरिक सुख यानी आनंद की खोज बताया है। भारतीय दर्शन में आनंद ही सुख तक ले जाता अगर मन:स्थिति बदले तो परिस्थितियां बदल जाएंगी। हम यह नहीं कहते हैं कि अंधेरा दूर करो, फिर प्रकाश आएगा। हमारा विश्वास है प्रकाश लाओ, तो अंधेरा स्वत: भाग जाएगा।

आनंद हमारा साध्य है, उत्सव हमारा साध्य है। उपयोगिता और सफलता को साध्य समझना असम्यक दृष्टि है। मूल बात है- हम आनंदित कैसे हों! सम्यक दृष्टि का साध्य यही हो सकता है। लेकिन भौतिकता, उपयोगिता और कामयाबी ही यदि साध्य हो जाए, तो यह असम्यक दृष्टि है।

चंडीदास भी कहते हैं- आनंद आमार गोत्र, उत्सव आमार जाति। आनंद हमारा बीज है, उत्सव उसका फूल है। पूरब के सभी संतों ने आनंद को ही साध्य माना है। आनंद की सम्यक दृष्टि ही जीवन जीने की कला का प्रथम सोपान है। धन और शक्ति का उपयोग है, लेकिन वे साध्य नहीं हैं। इसलिए, हमारी दृष्टि आनंदवादी होनी चाहिए।

मूल प्रश्न है, अंतस के बदलने की। वही असली कामयाबी है। जिस दिन व्यक्ति को यह कामयाबी मिलती है, उसी दिन वह असली आनंद को जानता है। आधुनिक युग में भूटान जैसा देश भी आनंद को अपनी कामयाबी की कसौटी मानता है।

यही हमारे जीवन की भी कसौटी होनी चाहिए।

जीने की कला समझ लें तो जीवन में आनंद ही आनंद है।जीवन बड़ा अमूल्य है। इसमें संसार का सौंदर्य भरा हुआ है, पर उसका आनंद तभी मिल सकता है जब जीवन जीने की कला को समझें। अध्यात्म जीवन जीने की कला सिखाता है, यह एक दिव्य विधा है। यह मनुष्य को हर दुख, कष्ट, विपत्ति और चिंता से छुटकारा दिलाकर आनंद से सराबोर करता है।

आनंदमय जीवन जीने के लिए प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है। यह हमें अपने जीवन के क्षणों में सजग और सचेत रहने के लिए कहता है।

काम यदि बोझ होगा ,जीवन नीरस हो जाएगा। काम में यदि आनंद है तो यह उत्सव हो जाएगा। अगर जीवन एक काम है, तो कर्तव्य हो जाएगा। अगर जीवन एक काम है, तो हम उसे ढोएंगे और किसी तरह निपटा देंगे। जीवन को काम की तरह नहीं, उत्सव की तरह, एक पर्व की तरह लेने की जरूरत है। जीवन एक आनंद का उत्सव है, काम नहीं है। ऐसा नहीं है कि उत्सव की तरह लेते हैं तो काम नहीं करते हैं। काम तो करते हैं। लेकिन काम उत्सव के रंग में खिल जाता है।

पहले उत्सव से जो पुलक आती थी जीवन में, जो थिरक आती थी, वह खो गई। इसलिए आदमी प्रसन्न नहीं है, प्रमुदित नहीं है, खिला हुआ नहीं है और इसके विकल्प के रूप में हमें मनोरंजन खोजना पड़ा।

इस संसार में सब कुछ है। यह हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम क्या प्राप्त करते हैं। समुद्र सभी के लिए एक ही है पर कुछ उसमें से मोती ढूंढते हैं, कुछ उसमें से मछली ढूंढते हैं और कुछ सिर्फ अपने पैर गीले करते हैं। जिंदगी भी समुद्र की भांति ही है यह सिर्फ हम पर निर्भर करता है कि इस जीवन से हम क्या पाना चाहते हैं, हमें क्या ढूंढना है? जिस इंसान की समझ जितनी सकारात्मक अथवा नकारात्मक होती है वह उसी रूप में मान-अपमान अथवा हालात को महसूस करता है। सकारात्मक व्यक्ति कीचड़ में भी कमल और नकारात्मक व्यक्ति चांद में भी दाग देख लेता है।

किसी घटना, परिस्थिति आदि के प्रति हमारा जो नजरिया होता है ,वह हमारी सोच का परिचायक है । हमारी सोच हमारे संकल्प एवं विचारों से निर्मित होती हैं। अत: हर परिस्थिति में सकारात्मक रहने के लिए दृढ़ संकल्प की आवश्यकता होती है। संकल्प से सिद्धि मिलती है। हमें किसी भी परिस्थिति में संकल्प को भंग नहीं होने देना चाहिए तथा न ही साधना की निरंतरता को टूटने देना चाहिए बल्कि धैर्यपूर्वक आशा का दीप प्रज्वलित रखना चाहिए।

सकारात्मकता जीवन सिद्धि का मूल मंत्र है। यह हर स्थिति में अनुकूलता का सृजन करता है। जहां सकारात्मकता रहती है ,वहां संपूर्ण प्रकृति आकृष्ट होने लगती है।

रामकृष्ण परमहंस के जीवन की एक घटना है । दक्षिणेश्वर मंदिर का विस्तार-कार्य चल रहा था। दोपहर का समय था। तीन मजदूर धूप-गर्मी से बेखबर पत्थर तोड़ रहे थे । रामकृष्ण परमहंस उधर से गुजरे तो तीनों मजदूरों को काम में लीन देखा । उन्होंने पहले मजदूर से पूछा कि ये तुम क्या कर रहे हो ? मजदूर ने उत्तर दिया – "देख नहीं रहे हो? मैं पत्थर तोड़ रहा हूँ ।" उसके इस कथन में दु:ख और बोझ था । कारण स्पष्ट था कि पत्थर तोड़ना, कोई आनंददायी काम नहीं हो सकता और इतना कहकर वह मजदूर फिर अपने काम में लग गया ।

अब दूसरे मजदूर की बारी थी । जब रामकृष्ण परमहंस ने वही प्रश्न उससे पूछा तो बोला – "क्या कर रहा हूँ? अरे अपनी रोजी-रोटी का जुगाड़ कर रहा हूँ । अगर काम न करूंगा तो कमाई कहां से होगी ।" दूसरे मजदूर ने सही बात कही थी । रोजी-रोटी कमाने के लिए काम तो करना होगा ।

लेकिन तीसरा मजदूर पत्थर तोड़ने के साथ-साथ गीत भी गुनगुना रहा था। वह गा रहा था- "मन भज लो आमार काली पद नील कमले ।" यह सुनकर रामकृष्ण परमहंस ने उससे पूछा- "क्या पत्थर तोड़ने में इतना आनंद आ रहा है ?" वह मजदूर बोला- "बाबा ! पत्थर थोड़े तोड़ रहा हूँ मैं । मैं तो मां काली का घर बना रहा हूँ । इससे बड़ा आनंद भला क्या हो सकता है?" यह सुनकर रामकृष्ण परमहंस ने साथ आए शिष्यों से कहा " देखो । जैसे ही काम के प्रति हमारा दृष्टिकोण बदलता है, वैसे ही कांटे, फूल या फूल, कांटे हो जाते हैं"। जीवन में जिसने आनंद पा लिया, उसने सब कुछ पा लिया।"

काम एक ही था पर तीनों व्यक्तियों का नजरिया अलग - अलग था । जीवन में दृष्टिटिकोण का अत्यधिक महत्व है । किसी ने ठीक ही कहा है -

नजर बदलो तो नजारे बदल जाते हैं।
सोच बदलो तो सितारे बदल जाते हैं।।

किसी परिस्थिति, किसी घटना या जिन संघर्षों का हम सामना करते हैं उसमें हमारी मानसिक स्थिति के अनुसार हमारा दृष्टिकोण बनता है। जीवन के उतार-चढ़ाव हमें अक्सर परेशान करते हैं। उन परिस्थितियों से पार पाने का तरीका भी भिन्न-भिन्न होता है। हम परिस्थितियों को किस प्रकार से लेते हैं, उसके प्रति हमारा नजरिया क्या होता है, यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है।परिस्थितियां की अपेक्षा उसके प्रति हमारी प्रतिक्रिया मायने रखती है। परिस्थितियों से अप्रभावित रहने की हमारी शक्ति का संचय वांछनीय है।

हम अक्सर यह पढ़ते एवं सुनते हैं सकारात्मकता जीवन के लिए अमूल्य है। हमें सकारात्मक रहना चाहिए। जीवन में सकारात्मकता से मुश्किलों का सामना मुस्तैदी के साथ किया जा सकता है, पर आज हमारे अंदर अविश्वास, सुरक्षा और भय के भाव व्याप्त हैं। जहां भय व असुरक्षा है ,वहां आनंद व उत्साह कैसे आ सकता है ?

सकारात्मक जीवन ही प्रकृति के अनुकूल है। हमारा दृष्टिकोण एवं हमारा जीवन सकारात्मक हो ,यह अभिलाषा सबकी रहती है , पर इसके लिए तैयारी, इसके लिए लगन एवं साधना कम ही लोग कर पाते हैं। जो संकल्पवान है, जो लगनशील है,जो बदलाव के लिए तैयार रहते हैं, उनके जीवन में सकारात्मकता की अमृत सुधा बरसती रही है।

आइए, हम भी जीवन में सकारात्मकता बढ़ाने के लिए कुछ उपाय करें। सद्गुणों से जीवन सजाएं ताकि हमारा व्यक्तित्व सकारात्मकता की सुरभि से सुवासित हो सके। श्रेष्ठ संकल्प सकारात्मक जीवन की आधारशिला है।

जीवन के हर अनुभव को खुशी और सीखने के अवसर के रूप में देखना श्रेयस्कर है।

संक्षेप में, यह विचार हमें बाहरी दुनिया की भाग-दौड़ छोड़कर अपने भीतर झाँकने और वहां शाश्वत आनंद (ब्रह्मानंद) को खोजने का मार्ग दिखाता है। जीवन आनंद का स्त्रोत है। जीवन रसपूर्ण है। हमें रसास्वादन करने की कला आनी चाहिए। दृष्टि रससिक्त होनी चाहिए। किसी ने ठीक ही कहा है—

नज़रिया बदल के देख हर तरफ नजराने मिलेंगे,

ऐ जिंदगी यहाँ तेरी तकलीफों के भी दीवाने मिलेंगे।

किसी की नजर में अच्छा हूँ तो

किसी की नजर में बुरा हूँ,

हक़ीक़त तो यह है,

जिसका नज़रिया जैसा है, उसकी नज़र में मैं वैसा हूँ।

नजरिए की तो बात है साहब

किसी को मुरझाया फूल किसी काम का ना लगा तो

किसी ने उसका गुलकंद बना लिया।

हर एक रंग खूबसूरत होता है साहब,

बस उसे देखने का नज़रिया चाहिए।

जीवन का रहस्य बाहर की चीजों में नहीं, बल्कि अपने भीतर के दृष्टिकोण और वर्तमान के अनुभवों में है, जहाँ हर पल आनंद और रस से भरा हुआ है। जो जिस रूप में है, उसे उसी रूप में स्वीकार करना आनंद का मार्ग है। परिस्थितियों से प्रभावित नहीं होना / कम प्रभावित होने से सुख मिलता है।

जीवन आनंदमय है, रसमय है, यही जीवन का रहस्य है। वर्तमान में जीना, हर पल को पूरी तरह अनुभव करना, और जीवन की छोटी-छोटी खुशियों में आनंद ढूंढना है। ध्यान करना, सहज रहना, और सुख-दुःख को स्वाभाविक रूप से स्वीकार करना, यह दर्शाता है कि जीवन की असल सुंदरता और सार्थकता इसी अनुभव में छिपी है तथा वर्तमान में जीना, आंतरिक शांति व सहजता की ओर उन्मुख होना,सकारात्मक रहना , परिस्थितियों से अप्रभावित रहना, अपने मूल स्वरूप में स्थित रहना,प्रकृति के रंग में जीना,आभार प्रदर्शन आदि खुशियों के मार्ग हैं। जीवन बच्चों की तरह जिएं। छोटी-छोटी चीज़ों में खुशी ढूंढना, अपनी भावनाओं के प्रति ईमानदार रहना और हर अनुभव से सीखना ही जीवन का रस है।

जीवन को उत्सव बनाना, जीवन के आनंद में डूबने का अर्थ कर्तव्यों व जिम्मेदारियों से पलायन नहीं, बल्कि उन्हें सरलता, खुलेपन और वर्तमान पल में जीने के साथ निभाना है, ताकि तनाव मुक्त होकर खुशी और आनंद से जी सकें।

काव्यांजलि

अमित कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक
एसएमई व कृषि हब , भागलपुर

संघर्ष

ये सफर नहीं संघर्ष है , कठिनाई नहीं लड़ाई है,

ये लड़ाई हम ही जीतेंगे, परिणाम हम बाद में देखेंगे।

हम अब नहीं रुकेंगे, न किसी के आगे झुकेंगे,

हमें कौन मिटाएगा, आगे बढ़ने से कौन रोक पाएगा।

जीवन में जीने का मकसद कुछ बनाएंगे,

छोटी है जिंदगी, पर कारवां बड़ा बनाएंगे।

आंसू हमें कमजोर बनाती हैं, हौसला ही विजयी बनाता है।

विजय आसान नहीं है ,लड़ाई बहुत कठिन है।

क्योंकि बिना मेहनत कुछ नहीं मिलता है,

कमाने के लिए कर्म जरूरी होता है।

जो सब करेंगे वो हम नहीं होंगे,

जो हम करेंगे वो सब लोग नहीं होंगे।

अभिनव बिहारी
अग्रणी जिला प्रबंधक
भागलपुर

एक

एक ने कहा एक से चलो चलें एक ओर,

चलते चलते राह में मिल गया एक और।

एक गिरे को एक ने पकड़ा, फिर लगी लंबी दौड़।

एक रात थी, एक अंधेरा, डगमग थी ना डोर।

एक सुबह ने खोली आंखें, हुई जीवन में भोर।

एक सुबह मुझे लगा कि आया मेरा दौर,

जब एक सुबह मंजिल ने बोला आ जा मेरी ओर।

परिंदों को स्पर्श, आसमान को गले लगाकर आते हैं,

हमसे आगे कोई नहीं चलो दुनिया को बतलाकर आते हैं,

जीत की ज़िद ही ज़िंदगी है मेरे दोस्त,

चलो! थोड़ा और ज़ोर लगाकर आते हैं।

मंजूषा चित्रकला

मुख पृष्ठ पर मंजूषा चित्रकला प्रदर्शित है। यह चित्रकला अंचल कार्यालय ,भागलपुर में पदस्थापित श्री योगेश कुमार की सुपुत्री आरूषि की कृति है। यह चित्रकला आरूषि की इस सृजनशील प्रतिभा का द्योतक है। सुंदर चित्रकला के लिए हार्दिक बधाई।

आइए ! मंजूषा चित्रकला पर एक दृष्टि डालते हैं -

अंग प्रदेश समृद्ध शिक्षा,संस्कृति, कला एवं व्यवसाय के लिए प्रसिद्ध रहा है। भागलपुर (चंपानगर), जो प्राचीन काल में अंग महाजनपद की राजधानी था, का उल्लेख महाभारत और पुराणों में भी मिलता है। यहीं मंजूषा कला की उत्पत्ति हुई और धीरे-धीरे यह भागलपुर की लोक पहचान बन गई।

भागलपुर की धरती पर जन्मी मंजूषा कला ऐसी ही एक अद्वितीय लोककला है, जो धार्मिक आस्थाओं, पौराणिक कथाओं और लोककथाओं से गहराईपूर्वक जुड़ी हुई है।

'मंजूषा' शब्द का अर्थ है सुंदर सजाया हुआ बॉक्स या टोकरी। यह विशेष रूप से मनसा पूजा (नागदेवी मनसा की आराधना) में प्रयुक्त होती है। इसकी संरचना चौकोर होती है, जिसे कागज, थर्माकोल की शीट और बाँस की कड़ियों से बनाया जाता है। ऊपर में इसका आकार चार-बंगला घर की तरह पिरामिडनुमा होता है। मंजूषा की दीवारों पर रंगीन चित्र उकेरे जाते हैं, जो मुख्यत: बिहुला-लखन की लोककथा पर आधारित होते हैं।

बिहुला-विषहरी की लोककथा पर आधारित इस कला में कथा को मंजूषा कला की चित्रात्मक शैली में उकेरा जाता है। इसमें गुलाबी, हरा और पीला मुख्य रंग होते हैं। हरे रंग से आकृतियों की रूपरेखा और पीले-गुलाबी से भरावन किया जाता है। पहले मंजूषा की दीवारों पर खनिजों से बने प्राकृतिक रंगों से चित्र बनाए जाते थे। समय के साथ इसमें व्यावसायिक रंगों और आधुनिक शैलियों का प्रयोग होने लगा। इसमें बिना कान वाली मानव आकृतियाँ होती हैं, जो 'एक्स' आकार में फैली होती हैं, और चारो ओर सर्प आकृतियाँ (जैसे लहरिया) होती हैं। पारंपरिक रूप से यह बांस, जूट और कागज से बने बक्सों (मंजूषाओं) पर बनती थी, लेकिन अब कैनवास और कपड़ों पर भी बनती है।

आज मंजूषा कला केवल पूजा तक सीमित नहीं है, बल्कि पेंटिंग्स, होम डेकोर और स्टेशनरी तक इसका विस्तार हो चुका है। अन्य सजावटी वस्तुओं (पेन स्टैंड, फोल्डर, आभूषण)में भी इसका प्रयोग होता है।

मंजूषा कला को बिहार की अन्य लोककलाओं जैसे मधुबनी और पिपरई कला की तरह राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने के प्रयास भी किए जा रहे हैं। इस कला को पुनर्जीवित करने के लिए नाबार्ड और स्वयंसेवी संस्थाओं ने कार्य किया है, और यह अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी पहचानी जा रही है।

मंजूषा कला केवल एक चित्रकला नहीं, बल्कि भागलपुर की सांस्कृतिक स्मृति, आस्था और लोककथा का अद्भुत संगम है। यह कला बिहुला जैसी नारी की साहस, श्रद्धा और संघर्षशीलता को अमर करती है और हमें याद दिलाती है कि लोककला ही हमारी जड़ों से जोड़ने वाली सबसे सशक्त कड़ी है। यह कला न सिर्फ लोक परंपरा को जीवित रखती है, बल्कि ग्रामीण कलाकारों के लिए आजीविका का साधन भी बन रही है।

****
****

राजभाषा एवं अन्य बैंकिंग गतिविधियां

हिंदी पखवाड़ा-2025 की कुछ झलकियां

नराकास भागलपुर की बैठक की कुछ झलकियां

07.06.2025 को आयोजित साइबर सुरक्षा वाकथॉन

स्वच्छता पखवाड़ा के दौरान आयोजित वाकथॉन

26.08.25 को आयोजित टाउन हॉल बैठक

राजभाषा एवं अन्य बैंकिंग गतिविधियां

23.06.25 को आयोजित एमएसएमई कार्निवल

15.08.2025 को स्वतंत्रता दिवस समारोह

सलेमपुर शाखा द्वारा आयोजित रि केवाईसी जनसुरक्षा संतृप्ति शिविर

राष्ट्रीय लोक अदालत की झलकियां

पत्रं-पुष्पम्

मोरेश्वर खापेकर
मुख्य प्रबंधक (रा.भा.)
यूको बैंक
अंचल कार्यालय,मुंबई

यूको अंगिका का बहुप्रतीक्षित अंक प्राप्त हुआ , धन्यवाद।

राजभाषा कार्यान्वयन के महत्वपूर्ण बिन्दुओं के साथ वर्तमान बैंकिंग तथा समसामयिक महत्व वाले विषय पर पाठकों को जागरूक कराती यह पत्रिका अपने पाठकों तथा स्टाफ सदस्यों के मध्य इस प्रकार अपनी पैठ बना रही है जिससे इस पत्रिका को अंगीकार करना कोई भी टाल नहीं सकता। इस अंक में विविध महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक विषयों पर स्टाफ सदस्यों द्वारा स्वयंस्फूर्त लिखे गए सारगर्भित लेख इसके प्रमाण हैं।

मिट्टी के गौरव कॉलम हमें बचपन में दूरदर्शन के मिट्टी के रंग धारावाहिक की याद दिलाता है। इस बार हमें शब्दों का जादूगर के रूप में साहित्य की विविध विधाओं के सशक्त साहित्यकार श्री रामवृक्ष बेनीपुरी का विस्तृत साहित्यिक परिचय प्राप्त हुआ। इसी प्रकार माँ पर प्रभात कुमार जी की तथा खुद के लिए जीने की प्रेरणा देनेवाली अमित कुमार जी की कविता काव्यांजली कॉलम को चार चाँद लगा रही है।

अंचल में जारी विविध गतिविधियों की समुचित तथा सचित्र जानकारी से स्टाफ सदस्यों को निरंतर प्रेरणा मिलती है। यूको अंगिका का नियमित प्रकाशन इसे महत्वपूर्ण बनाता है।

पत्रिका लोकप्रियता के चरम बिन्दु पर पहुंचे, यही मेरी शुभकामनाएँ।

अगले अंक की प्रतीक्षा में .....

****

****

अजीत कुमार यादव
प्रबंधक (राजभाषा)
भारतीय स्टेट बैंक
भागलपुर

यूको अंगिका का अक्टूबर 24 - मार्च 25 का अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका में संकलित सभी लेख काफी रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका का सम्पादकीय लेख एवं अंचल प्रमुख का संदेश बहुत ही उत्तम कोटि का है। पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्यों विशेषत: संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

पत्रिका के आगामी अंक का हमें बेसब्री से इन्तजार रहेगा।

****

राजन साव
प्रबंधक (राजभाषा)
पंजाब नैशनल बैंक
भागलपुर

आपके कार्यालय की पत्रिका यूको अंगिका वर्ष 06, अंक 02 : (अक्टूबर 24 - मार्च 25) ई मेल के माध्यम से प्राप्त हुई। आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित यह पत्रिका अत्यंत ही रोचक एवं विविध उपयोगी जनकारियों से परिपूर्ण है। पत्रिका का कलेवर, लेख, रचनाएं व अन्य सामग्री उत्कृष्ट श्रेणी के हैं। इसके अतिरिक्त पत्रिक में दी गई रचनात्मक गतिविधियाँ एवं विभिन्न नवाचारी पहलें इसे और भी प्रभावी एवं पठनीय बनाती हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सम्पूर्ण संपादकीय टीम को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं !

यूको बैंक ने एमएसएमई एवं कृषि विशेष ऋण शिविर का आयोजन

शिविर में 529 ग्राहकों का ऋण स्वीकृत

भागलपुर। यूको बैंक अंचल कार्यालय की ओर से मंगलवार को एमएसएमई एवं कृषि विशेष ऋण शिविर का आयोजन किया गया। बैंक के प्रधान कार्यालय से आए उप महाप्रबंधक देवाशीष नायक, उप अंचल प्रमुख हेमंत कुमार, मुख्य प्रबंधक सचिन यादव आदि मौजूद रहे। शिविर में डीजीएम ने 529 ग्राहकों के ऋण स्वीकृत किए। एमएसएमई हब प्रमुख सुनील पात्रो ने बैंक की योजनाओं से ग्राहकों को अवगत कराया। संचालन वरिष्ठ प्रबंधक राकेश रंजन ने किया।

डिजिटल बैंकिंग का करें अधिक उपयोग

यूको बैंक की ओर से किया गया एमएसएमई व कृषि का विशेष शिविर का आयोजन

वरीय संवाददाता, भागलपुर

यूको बैंक की ओर से आयोजित शिविर में शामिल पदाधिकारी व अन्य.

यूको बैंक अंचल कार्यालय, भागलपुर की ओर से मंगलवार को एमएसएमई व कृषि का विशेष शिविर आयोजित किया गया. इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बैंक के प्रधान कार्यालय, कोलकाता से आये उप महाप्रबंधक देवाशीष नायक उपस्थित रहे. उन्होंने ने कहा है कि शिविर का उद्देश्य यूको बैंक की योजनाओं से लोगों को लाभान्वित करना है. बैंक के पास कृषि एवं एमएसएमई क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण योजनाएं है. उन्होंने ग्राहकों से अनुरोध किया कि वे बैंक की विभिन्न आकर्षक योजनाओं का लाभ उठाएं, डिजिटल बैंकिंग का अधिक से अधिक उपयोग करें. उन्होंने बैंक द्वारा लिए गए ऋण को समय पर चुकता करने का भी अनुरोध किया. अंचल प्रमुख नीरज कुमार शुक्ला ने कहा कि बैंक अपनी 83 शाखाओं के साथ भागलपुर एवं बांका जिले में अग्रणी बैंक के रूप में जनता की सेवा कर रहा है. मुख्य प्रबंधक सुनील पात्रा ने बैंक द्वारा आरंभ की गयी विभिन्न नई योजनाओं यूको अभिनंदन, यूको जीएसटी स्मार्ट, यूको एमएसएमई स्मार्ट, यूको एमएसएमई ऑफिस आदि ऋण योजनाओं तथा यूको कृषक, यूको रोकड़, यूको प्रिविलेज, यूको आराजिया, यूको संचयिका, यूको बिजनेस, यूको बिजनेस प्लस आदि जमा योजनाओं से ग्राहकों को अवगत कराया. इस अवसर पर उप महाप्रबंधक द्वारा कई ग्राहकों को ऋण स्वीकृति पत्र प्रदान किये गये. कार्यक्रम का संचालन अंचल कार्यालय, भागलपुर में पदस्थापित वरिष्ठ प्रबंधक राकेश रंजन ने किया. कार्यक्रम में अंचल प्रमुख नीरज कुमार शुक्ला, उप अंचल प्रमुख अमरजीत सिंह आदि मौजूद थे.

खाते में प्रीमियम रखने का किया

भागलपुर. बिहार ... प्रधानमंत्री जीवन ज्योति और प्रधानमंत्री सुरक्षा के अंतर्गत पॉलिसी एक जून तक होना है. इसके लिए ग्राहक कि यदि पॉलिसी का तिथि तक नहीं होगा समाप्त हो जायेगी. पॉलिसी की वैधता ... से 31 मई 2026 ... पॉलिसी धारकों से ... कि अपनी बीमा पॉलिसी के लिए राशि 25 ... 2025 के बीच ... में रखना सुनिश्चित ... जीवन ज्योति बीमा ... 436 रुपये एवं प्र... बीमा योजना के लिए ... पॉलिसी के अनुरूप ... जून 2025 तक खाता ... डेबिट हो जायेगी.

बुधवार को विकसित भारत पर संगोष्ठी में उपस्थित राजभाषा कर्मी। ●● हिन्दुस्तान

भाषाओं की भूमिका पर संगोष्ठी आयोजित

भागलपुर। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), भागलपुर द्वारा 'विकसित भारत 2047 : भाषायी भाषाओं की भूमिका' विषय पर एक राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें केंद्र सरकार के कार्यालयों, बैंकों, बीमा कंपनियों, उपक्रमों के अधिकारियों तथा केंद्रीय विद्यालय गोड्डा एवं नवोदय विद्यालय भागलपुर, खगड़िया व गोड्डा के कार्मिकों ने भाग लिया।

युको आरसेटी में स्वच्छता पखवाड़े के तहत कार्यक्रम आयोजित

नाथनगर. यूको बैंक अंचल कार्यालय, भागलपुर द्वारा यूको आरसेटी, भागलपुर में स्वच्छता पखवाड़ा के अंतर्गत कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस अवसर पर राजकुमार, अंचल प्रबंधक यूको बैंक भागलपुर, अभिनव बिहारी जिला अग्रणी प्रबंधक भागलपुर, हेमंत कुमार प्रबंधक यूको बैंक अंचल कार्यालय,भागलपुर , आनंद कुमार निदेशक यूको आरसेटी भागलपुर ने संस्थान परिसर में स्वच्छता अभियान चलाया.

यूको बैंक द्वारा आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित अतिथि। ● हिन्दुस्तान

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

भागलपुर। यूको बैंक के संयोजन में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की छमाही बैठक शुक्रवार को आयोजित की गई। कार्यक्रम का शुभारंभ नराकास के अध्यक्ष राजकुमार एवं अन्य अतिथियों ने किया। बैठक में राजभाषा कार्यों की समीक्षा की गई, तथा राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग पर विचार-विमर्श किया गया। राजकुमार ने भागलपुर नराकास को गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग से प्राप्त पुरस्कार पर बधाई दी।

10 कार्यालयों को नराकास की बैठक में सम्मानित किया

[illegible]

श्रीमती अंशुली आर्या,सचिव, राजभाषा विभाग,भारत सरकार के कर कमलों से वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए 'प्रशंसनीय श्रेणी' का पुरस्कार प्राप्त करते हुए भागलपुर नराकास के सदस्य सचिव श्री सुभाष चंद्र साह

बैंकिंग व्यवसाय के विभिन्न मानदंडों के अंतर्गत श्रेष्ठ प्रदर्शन हेतु अंचल कार्यालय, भागलपुर को हाल में प्राप्त विभिन्न पुरस्कार

यूको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)
UCO BANK
(A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का
Honours Your Trust